

मीठे प्रवचन 5

(मेले में अकेला)

“प्रवचनकार”

आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

प्रकाशक:

श्री सत्यार्थी मीडिया

रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा

फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

ॐ ह्रीं नमः

प्रथम संस्करण :- अक्टूबर 2018

प्रतियाँ : 1,000

मीठे प्रवचन 5

आचार्य वसुनंदी मुनि

मंगलाशीषः

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य श्री १०८ विद्यानंद जी मुनिराज

“मुद्रक”

जैन रत्न सचिन जैन निकुंज

9058017645

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे – खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे।

॥प्राक्कथन॥

गणिनी आर्थिका गुरुनंदनी

भारतीय संस्कृति संस्कारों की संस्कृति है, सद् विचारों के बीज हैं संस्कार, इन संस्कारों के बीजों को परम्परागत रखने का स्थान है साहित्य । दर्पण और दीपक कभी झूठ नहीं बोलते हैं, जैन धर्म का साहित्य दर्पण एवं जलते हुए दीपक की तरह है। दर्पण आदर्श को कहते हैं, दर्प जिससे न, हीं हो वह दर्पण है। दर्पण देखने को सब ललकते हैं किंतु दर्पण किसी को नहीं ललकता, यह है आदर्श दर्पण का । दर्पण और दीपक को धमकाने वाले पत्थर और आँधिया हैं। बस इन्हीं दो उपमाओं में समाया है पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व वैज्ञानिकों की तरह खोजबीन करना आपके व्यक्तित्व की निशानी है। बड़े - बड़े ग्रन्थों के रहस्यों को सरलता से समझाना आपका स्वभाव है। आपके अंदर समन्त भद्राचार्य जैसा शास्त्रार्थ करने का अदम्य साहस है, अकलंक देव जैसे प्रमाणों की प्रचुरता आपकी वाणी व लेखनी में स्पष्ट झलकती है, जिनसेनाचार्य जैसे निर्विकार अनासक्त भाव जो कर्ता में अकर्ता, भोक्ता में अभोक्ता की अनुभूति कराते हैं, अमृतचंद्राचार्य जैसे निर्नाम निर्माण कहीं किसी भी जगह अपने नाम से कोई आश्रम, मठ आदि नहीं बनवाये ।

आप हमेशा युवावर्ग को धर्म के लिए प्रेरित करते हैं। वृद्धोंकी सेवा, वैयावृत्ति, समाधिस्थों की साधना में आपका निर्यापकाचारित्व अनुभूत आदर्श है। आप सम्पूर्ण जैन समाज की ऐसी अमूल्य निधि हैं, जिनके कृतित्व को युगों - युगों तक स्मरण किया जायेगा । आपने साहित्य के रूप में अनकों शास्त्रों का सृजन किया है। आपकी लोक प्रचलित कृति के रस में 'मीठे प्रवचन' जिस कारण से आप जनमानस के अंतः पटल पर वास करते हैं। सम्पूर्ण भारत ने

आपके साक्षात् दर्शन नहीं किये, परन्तु मीठे प्रवचन से अपनी पिपासा को शांत सवने किया। यह कृति द्वादशांग वाणी के प्रकाश की प्रथम रश्मि है। यह भव भ्रमण के अपार पारावार में निमग्न, निराश्रित, निराश पथिक के लिये दिशासूचक ज्योति स्तम्भ हैं। ऐसा दुर्लभ सम्यक्त्व जिन्हें उपलब्ध हो गया है, वे प्रणम्य हैं।

वर्तमान परिस्थितियां बदलती जा रही है, समाज की आवश्यकतायें बदल रही हैं। अतः आदर्श और मूल्यों के साँचे पुराने पड़ जाते हैं। नई संस्थापन के उभरने का समय आ गया है। और समय की मांग है, कि किंचित् ज्ञान में अभिरुचि रखने वालों की सहज प्रवृत्तियों एवं आवश्यकताओं के बीच एक नया संतुलन स्थापित किया जाये । आधुनिक युग में प्राचीन आदर्शों सहेजते हुए नये आदर्श अपनाना और उनका युगीन प्रस्तुतिकरण करना अत्यावश्यक है। इसके लिए दार्शनिक साहस आवश्यक है, ऐसा दार्शनिक साहस यदि स्वच्छ दर्पणवत् कही देखा जा सकता है, तो वे हैं निर्ग्रन्थ गुरु ।

जिस प्रकार एक चतुर शिल्पकार पूर्व भवों के संस्कार एवं परम्परा से प्राप्त अनुभवों के आधार पर अपनी दृढ इच्छा शक्ति, अडिग संकल्प, एकान्त चिंतन, सदाचार, संयम की साधना के बल पर दुर्भेद्य शिलाखण्डों में भी अपने साहस को साकार कर लेता है। उसी प्रकार साहित्य के रसिक, दृढ इच्छा शक्ति के माध्यम से शब्दकोश में भावाभिव्यंजना भरकर उन्हें जीवन्त सुगाह्य और लोकप्रिय बना देते हैं, ऐसे शब्द चितेरे हैं पूज्य गुरुदेव वर्तमान की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली कृति का नाम है 'मीठे प्रवचन' । "भ्रमरोग हर जिनके वचन मुख चंद्रतै अमृत झरै ।" मीठे प्रवचन भ्रम रूपी रोग का निवारण करने वाले होते हैं, जैसे मानो सुधाकर सुतामृत वर्षा कर रहा हो, ऐसे ही सतत ज्ञान ध्यान में लवलीन रहने वाले हैं कृति के कृतिकार। आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि साधु,श्रावक व सामान्यजन भी इसे अपनी स्वाध्याय नियमावली में लेकर अपने परिणामों को निर्मल बनाएंगे व परम उत्कर्ष स्थान को प्राप्त कर सच्चे आत्मसुख को भी प्राप्त करेंगे । जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस कृति को रचा, उन पुनीत चरणों में समग्र निष्ठा के साथ सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति पूर्वक नमोस्तु ज्ञापित करती हूँ व उनके आशीष की कामना करती हूँ जो हमें विषम परिस्थितियों में संबल प्रदान करता है।

प्रस्तुत कृति के माध्यम से स्व पर कल्याण की भावना को वृद्धिगंत करते हुए जिनशासन की प्रभावना में आप सब निमित्त बनेंगे । हंसवत् क्षीरग्राही दृष्टि बनाकर गुणों को ही ग्रहण करें । इस पुस्तक की पांडुलिपि तैयार करने में संघस्थ त्यागी व्रती, मुद्रण प्रकाश में सहयोगी सभी सुधीजनों को पूज्यगुरुदेव का मंगलमय शुभाशीष ।

“लोकोत्तर मुनि आप कहते, संघ चतुर्विध संचालक ।
अलौकिक चर्या वृत्ति करते, शिवपथ के हो तुम लायक ॥
हस्त कमल को सिर पे धरते, शीश झुकाकर करें नमन ।
अक्षय अविनाशी पद देना, नयन कमल पर है आसन ॥”



पुण्यार्जक

सकल दिगम्बर जैन समाज,
बैंक एन्वलेव
लक्ष्मीनगर, दिल्ली
के सौजन्य से
1000 प्रतियाँ प्रकाशित

संसार का सुख - दुःख बहुरूपिणी विद्या की तरह से है इसे

गिरगिट की तरह रंग बदलने में देर नहीं लगती । बचपन में परी की कहानी सुनते थे । उसमें बताया जाता था कि परी अनेक सुन्दर - सुन्दर रूपों में दिखती तो है किन्तु पकड़ में नहीं आती। इनको पकड़ना उसी प्रकार कठिन है जिस प्रकार किसी नट का अपने ही कंधों पर खड़े हो जाना या एक ही तलवार से उसी को काट देना, बिना आयने के अपनी आँखों से आँखों को देखना या श्वसन के बिना जीवन्त रहना। संसार का रूप जब समझ आ जाता है तब सभी पकड़ और अकड़ छूट जाती है और खुद को मोह माया के जाल में अकड़ा हुआ अनुभव करता है। संसारी प्राणी के साथ अनन्त बार ऐसी गलती हुई है कि उसे जो अपना है वह तो पराया दिखाई देता है जो पराया है वह अपना दिखाई देता है किन्तु इन्हें आजमाने की कोशिश न करना, ये उस ओस की बूँद के मोती हैं जो देखने में सुन्दर लगते हैं किन्तु इन्हें माला में नहीं पिरोया जा सकता । हम जिन्हें अपना मान के उनके साथ सुंदर सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं बाद में एहसास होता है कि वह हमारे दुश्मन हैं। अतः अब तो ऐसी भावना है कि आत्मा से कोई ऐसा ज्ञान प्रकट हो जाये या **समय की ऐसी हवा चले कौन अपना है कौन पराया पता लगे ।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुजंटी

लोग कहते हैं इन्तजार की घड़ी मुश्किल से व्यतीत होती है।

जिनका बेसबरी से इन्तजार होता है यदि वे समय पर न पहुँचें तो ऐसा लगता है घड़ी रुक गयी हो किन्तु जब हमारा कोई इन्तजार करता है तब लगता है कि कोई ज्यादा विलम्ब थोड़े हुआ है, लो आ गये। जो व्यक्ति जिन्दगी में कुछ शुभ कार्य करने का इन्तजार करते हैं जिन्दगी उनके साथ छल कपट से पेश आती है। हम इन्तजार करते रह जाते हैं और जिन्दगी गुजर जाती है। जीवन को पकड़ पाना बड़ा कठिन है, लोगों ने कहा है, समय किसी का गुलाम नहीं है समय का चित्र किसी मनीषी ने ऐसा बनाया कि सामने से ऐसा कोई पहचान न पाये, और कोई पकड़ न सके पीछे से ऐसा चिकना बनाया। यथार्थता तो यही है समय जब आता है तो पहचान नहीं पाते जब जाता है तो पकड़ नहीं पाते। जिन्दगी भर अपने आप को छलते-छलते आत्मा में छाले पड़ गये। माँगने पर दो क्षण समय न मिला वक्त के लाले पड़ गये, कम से कम अब तो इन्तजार छोड़ो जो सामने समय खड़ा है उसका सदुपयोग कर लो। अच्छे काम को कल पर टालने वाला मानो अच्छा कार्य करना नहीं चाहता। बुरे कार्य को आज करने वाला उसे न त्यागने वाला समझो कल भी उसके चंगुल से न छूट पायेगा। तुम जितना सोचते हो उससे ज्यादा तीव्र रफ्तार है **जिन्दगी की, यदि बात समझ में आयी हो तो कोई अच्छा कार्य करने का संकल्प ले लो।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कुछ लोगों की आदत होती है बात टालने की, काम करना नहीं

आता हो तो उसमें दोष निकालने की और जो काम करता हो उसकी निन्दा करने की तभी तो कहावत बनी है नाच न जाने आँगन टेढ़ा। जो पुरुष उद्यमशील होते हैं और कार्य करने में समर्थ होते हैं वे पल भर की भी इन्तजारी नहीं करते कल की बात तो बहुत दूर। तुम कल के काम को आज करना चाहते हो या आज के काम को कल? आलसी व्यक्ति आज के काम को कल पर टालता है और पुरुषार्थी व्यक्ति कल का काम भी आज निपटाना चाहता है। दोनों की क्रियाओं के फल में इतना अन्तर है कि आलसी आज करनी के फल को न आज खा पाता है न कल किन्तु पुरुषार्थी व्यक्ति अनेक सफलताओं को हासिल करके भी अहंकार से रहित होकर अन्य सफलताओं का आधार बन जाता है। अब हमें गाड़ी, ड्राइवर, गेयर और रास्ता बदलने की पुरानी आदत को छोड़ देना चाहिये और जहाँ पहुँचना चाहते हैं वहाँ तक का रास्ता स्वयं बनाइये। जहाँ रास्ता है वहाँ से चलना प्रारम्भ नहीं करना चाहिये अपितु जहाँ हम हैं वहाँ से गन्तव्य तक रास्ता बनाने की योजना को मूर्त रूप देना चाहिये। जैसे प्याज को छीलने पर कुछ नहीं निकलता वैसे रास्ते बदलने पर भी कुछ नहीं मिलता, मात्र रास्ते ही रह जाते हैं। हिम्मत है तो नया रास्ता बनाओ और मंजिल पाओ। **दूसरे का मुँह क्यों ताकते हो, क्या तुम्हारा रास्ता कोई दूसरा बनायेगा।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

4

इरादे नहीं रास्ते बदलो

एक कार्य को सिद्ध करने की अनेक विधि होती हैं जिसको जिस विधि पर भरोसा होता है वह उसी विधि से कार्य को सिद्ध कर लेता है। यदि कमरे की सफाई करनी है तो छोटी झाड़ू से भी की जा सकती है नहीं करनी है तो अनेक झाड़ू सामने रखीं हो तो सब में कोई न कोई दोष दिखेगा, मन कहेगा चलो कल करेंगे। किसी भी कार्य को करने का संकल्प यदि लेना है तो विकल्पों को छोड़ दो। अनेक विकल्पों के साथ लिया गया संकल्प कभी पूरा नहीं होता, विकल्प अन्य विकल्पों की पैदावार खरपतवार की तरह करते हैं। संकल्प एक विशाल वट वृक्ष की तरह से होता है जो आस - पास के विकल्प रूपी पौधों को सुखा देता है। कार्य करने वाले व्यक्ति बार-बार विकल्प नहीं बदलते, अनेक विकल्पों को त्यागकर एक संकल्प ग्रहण करते हैं। जिन्दगी का मकसद वही हल कर पाते हैं जो अपने नेक इरादे और सच्चे मनसूबे नहीं बदलते। **मंजिल बदलने से मंजिल नहीं मिलती रास्ते बदल कर देखो मंजिल अवश्य मिलेगी।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

5

समय सदा एक सा नहीं

बिच्छू से डरने वाले व्यक्ति सर्प के बिलों में हाथ नहीं डालते, मोमबत्ती से डरने वाले व्यक्ति कभी सूर्य के प्रकाश में गमन नहीं करते, तालाब से डरने वाले व्यक्ति क्या कभी समुद्र पार कर सकते हैं? स्वयं से डरा व्यक्ति क्या भयंकर संकटों को आमंत्रित करेगा? स्वयं के नेत्रों में यदि ज्योति नहीं है तो जुगनू के प्रकाश में सूई में धागा डालने की बात कितनी हास्यास्पद है। एकान्ततः सफलता तो किसी के जीवन में नहीं मिलती। कुशती लड़ने वाले पहलवानों में एक तो हारता ही है, जिस सिक्के में टेल और हेड दोनों हैं उसे उछालने पर हर बार हेड ही आये ऐसा सम्भव नहीं। यह तो तभी सम्भव हो सकता है जब दोनों ओर हेड या दोनों ओर टेल ही हो। खेल के मैदान में उतरने से पहले केवल जीत का जश्न मनाने का अरमान लेकर न चलो, पराजय की उदासी को भी सीने से लगाकर आगे बढ़ो। चकम्पो के खेल में हर बार अट्टा नहीं आता और ताश का हर पत्ता हुकुम का इक्का नहीं होता, आकाश में उड़ने वाला पक्षी सदा उड़ता ही रहे कभी न बैठे ये सम्भव नहीं जीवन के खेल में जय - पराजय वैसे ही साथ चलती हैं जैसे दिन - रात। **जो हारने की चोट सहन नहीं कर सकते वो जीत को पचाने में भी असमर्थ हैं क्योंकि जिस नदी में बाढ़ आती है वह नदी कभी सूख भी सकती है।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

6

काम से बढ़ता नाम

नाम के इच्छुक ईमानदारी से काम करने में असमर्थ हो जाते हैं

क्योंकि वे इस प्रकार काम करते हैं कि उनका नाम हो जाये, परन्तु इस तरीके से न तो काम होता है न ही नाम किन्तु जो नाम की चाहना से रहित होकर काम करते हैं उनका काम सफल हो जाता है बाद में नाम भी। **काम को इतनी अच्छे से करो कि संसार में तुम्हारा नाम हो जाये।** नाम को इतना धवल बनाओ कि बिना मेहनत के तुम्हारे नाम से ही सब काम होने लगें। परन्तु नाम और काम कथंचित् एक दूसरे के विरोधी भी हैं और पूरक भी। नाम जिनालय में लगे शिखर की तरह होता है और काम नींव का पत्थर, सभी नाम के इच्छुक हो जायें तो भी काम न होगा और कोई भी नाम न चाहे तो भी काम न होगा।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

7

किसका बुरा होगा

दूसरो के प्रति बुरा करने वाले सोचते हैं कि हमारा भला हो

जायेगा किन्तु हमारा भला दूसरे का बुरा करने से नहीं भले से ही सम्भव है। दूसरे का बुरा तब तक नहीं किया जा सकता जब तक उसका पाप कर्म का उदय न आये। यदि सामने वाले के पाप का उदय चल रहा है तो बुरा करने की आवश्यकता क्या है, उसका तो अपने आप ही बुरा होगा कदाचित् सामने वाले का पुण्य का उदय चल रहा है तो भी तुम्हारा बुरा करने से उसका बुरा न हो सकेगा। जब तुम किसी का बुरा कर ही नहीं सकते तो चेष्टा क्यों करते हो? हाँ तुम स्वयं का अच्छा बुरा कर सकते हो उसमें दूसरा तो निमित्त बन सकता है। दूसरे का बुरा करके अपने लिये बुरा फल प्राप्त कर सकते हो, दूसरे का अच्छा करके अपने लिये अच्छा निमित्त बना सकते हो। सामने वाले के तीव्र पुण्य के उदय में तुम्हारे द्वारा दिया गया विष भी अमृत का काम ही करेगा, बुराई-अच्छाई के रूप में प्रकट हो जायेगी, विरोध करने से सहयोगी बनेंगे, निन्दा करने से कीर्ति फैलेगी। सामने वाले के पाप का उदय चल रहा है तब भला करने से, उसका भला हो न हो स्वयं का भला अवश्य होगा। दूसरो का मुँह काला करने के लिये हाथ में कोयला लेने से उसका चेहरा काला कर पायें या न कर पायें, स्वयं के हाथ काले जरूर होंगे, **दूसरे को चन्दन का तिलक लगाने से उसका मस्तक महके या नहीं आपकी अंगुली अवश्य महकेगी।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सुख शान्ति कहाँ

इस दुनियाँ में सब कुछ पैसे के बल से प्राप्त नहीं किया जा

सकता। व्यक्ति को लगता है पैसा, पद, प्रतिष्ठा से सुख शान्ति मिल जायेगी किन्तु उसका यह सोचना अग्नि की लपटों पर घी उड़ेलने जैसा है। अनेक व्यक्ति पद, पैसा, प्रतिष्ठा प्राप्त करके भी दो क्षण की आत्म शान्ति के लिये तरस गये। आज जितने भी पैसे वाले हैं या उच्च पद पर आसीन या प्रतिष्ठा को प्राप्त किये हुये हैं यदि वे पुण्य कार्य और धर्म ध्यान से रहित हैं तो किंचित् भी सुख न पा सकेंगे। सुख शान्ति प्राप्त करने के लिये आत्मा में धर्म होना चाहिये। **किसकी आर्थिक स्थिति कैसी है यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्व की बात तो ये है किसकी आत्मा में धर्म के फूल खिल रहे हैं।** सामाजिक स्थिति यदि सुदृढ़ हो भी जाये तब भी आत्मिक शान्ति तो आत्मकूप के शान्ति जल स्रोत से ही मिलेगी। शरीर भले ही सुन्दर हो यदि मन खराब है तो वह खुश न रह सकेगा। सोने के कलश में रखा हुआ जहर क्या अमृत का काम कर सकेगा? अतः सिद्ध यही होता है आत्म सुख शान्ति प्राप्त करने के लिये मानसिक स्थिति सुधारो और आत्मा की भूमि पर सुख शान्ति के बीज बोओ। यह काम आपने आज तक नहीं किया अनादि काल से आर्थिक, शारीरिक तथा सामाजिक स्थिति सुधारने में लगे हो यह तो खुद को ही धोखा देने का कार्य है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

शब्दों का जादू

शब्दों की शक्ति अचिन्त्य है। उनकी शक्ति का पार पाना

सामान्य व्यक्ति के बस की बात नहीं क्योंकि शब्दों के माध्यम से ही सम्बन्धों का विच्छेद होता है, शब्दों के माध्यम से ही राग, द्वेष वृद्धि को प्राप्त होते हैं, शब्दों के माध्यम से ही जीवन में महाभारत होती है, शब्दों से ही मोह का बन्धन जटिल हो जाता है। शब्द दुःखों का सृजन करने वाले भी होते हैं, तो दूसरी ओर मित्रता की बदली हो सकती है, शब्द प्रमोद भाव का कारण भी हैं शब्दों से किसी के मन को करुणाशील बनाया जा सकता है। शब्द औषधि का काम भी करते हैं, शब्द आपसी सम्बन्धों को सुदृढ़ भी बनाते हैं। शब्द देशना का काम करके सम्यक्त्व की उत्पत्ति भी करते हैं। सम्यग्ज्ञान के शब्द तत्त्व ज्ञान के निमित्त कारण हैं। शब्दों से दिया गया सम्बोधन भी चारित्र्य का उत्पादक होता है शब्दों के माध्यम से वैराग्य का पोषण एवं तत्त्व चिंतन भी किया जाता है। शब्दों से ही पूजा, भक्ति, स्तुति, वन्दना एवं इबादत भी होती है। शब्दों से ही सम्मान, अपमान होता है। शब्दों से गाली भी दी जा सकती है तो, गीत भी गाये जा सकते हैं। शब्द तो वो पैनी धार वाली तलवार है जिससे अपना वध भी किया सकता है और सुरक्षा भी। ये आप पर निर्भर करता है कि आप शब्दों का प्रयोग कैसे करते हैं। **शब्दों के घोड़े पर सवार होने से पहले सोच लो कि तुम्हें कहाँ जाना है तभी मंजिल पा सकोगे।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

क्षमाशील कौन

क्षमावाणी पर्व मनाना सार्थक तभी होता है जब हम अपने द्वारा

की गयी गलतियों की अन्तरात्मा से क्षमा माँग सकें। हमारी क्षमा माँगने की प्रक्रिया इतनी गहरी और अन्तरात्मा से निष्पन्न होना चाहिये कि सामने वाला उसे क्षमा कर दे। क्षमा माँगना आसान नहीं है उसके पहले अपने अहंकार को तिरोहित करना पड़ता है अहंकार का छोड़ना बहुत कठिन है क्योंकि अनादि काल से अहंकार के पोषण के लिये ही तो सब कुछ किया है यदि उसे ही छोड़ दिया तो अपने पास क्या बचा? इसीलिये तीव्र कषायी, अज्ञानी मोही जीव कभी किसी से अन्तर आत्मा से क्षमा नहीं माँग सकता। फिर भी संसार में ऐसे बहुत से महानुभाव हैं, जिन्हें अपनी गलती का बोध हो जाये तो दूसरों से हाथ जोड़ कर माफी माँग लेते हैं। अपनी भूल का पश्चाताप भी करते हैं फिर भी संसार में ऐसे व्यक्ति ढूँढना दुर्लभ है जो अकारण ही अपनी निन्दा सुनकर, मिथ्या दोषारोपण सहन कर, अपनी बदनामी स्वीकार कर, अपमान, उपेक्षा की अग्नि में जलते हुये भी सबको भूल जाये। आत्मा में लगी गहरी चोट को भी विस्मित करके दूसरे को अन्तरात्मा से क्षमा कर दें। यह काम साधु के अलावा दूसरा कोई कर ही नहीं सकता। **जिसे आगे संसार में अधिक जन्म मरण धारण नहीं करना है, वही क्षमा करने व माँगने में समर्थ होता है।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

चुनौतियाँ जीवन की

यदि जीवन में आगे बढ़ना चाहते हो और कुछ नया पाना चाहते

हो, ऐसा नयापन कि आपकी जिस उपलब्धि पर दुनिया रीझ जाये और आप भी परम सन्तुष्टि का अनुभव कर सकें तो उसका एक ही उपाय है जीवन में घबराओ मत परिस्थितियों के द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों को अदम्य साहस के साथ स्वीकार करो। चुनौती वे स्वीकार नहीं करते जिन्हें अपने मिट जाने का डर होता है चुनौती तो वे स्वीकार करते हैं जिन्हें जीवन में कुछ नया पाने का जुनून सवार होता है। चुनौती तो एक अग्निपरीक्षा है जिसमें जल कर जो बचता है वह शुद्ध सोना बन जाता है जो सोना नहीं होता वह जलकर खाक हो जाता है। यदि आप अपने आप को सोना मानो तो अग्निपरीक्षा से डरो मत, अग्निपरीक्षा दो, और निखर कर कुन्दन बन जाओ कदाचित् आप सोना नहीं हुये, अग्निपरीक्षा में जलकर खाक हो गये तो तुम्हारा भ्रम टूट जायेगा। तुम्हारी यथार्थता तुम्हारे सामने आ जायेगी। चुनौती स्वीकारने में हानि ही क्या है, यदि जीत गये तो दुनिया सम्मान करेगी और नहीं जीत पाये तो अपनी आत्मा अपनी कमी को सुधारने का प्रयास करेगी। **हारना एक पाठ सीखना है, जीतना परीक्षा परिणाम का पुरस्कार प्राप्त करना है।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

संसार में अनेक प्रकार के बन्धन हैं लोहे की सलाखों का बन्धन,

रस्सियों का बन्धन, कपड़े का बन्धन, बाहुपाश का बंधन, कारागार का बन्धन। बन्धन में पड़ा हुआ व्यक्ति आगे बढ़ने में असमर्थ होता है। बन्धन मार्ग को अवरुद्ध कर देता है। सांकल से बंधा हाथी, रस्सी से बंधा हुआ गधा, लगाम से बंधा घोड़ा, नकेल पड़ा हुआ ऊँट, नाथ पड़ा बैल, जंजीरों से बंधा हुआ अपराधी, किसी के बाहुपाश में बंधा हुआ कामी, स्नेहानुबद्ध बालक, प्रेमानुबद्ध युवती, चाह कर भी आगे नहीं बढ़ सकते किन्तु जिस व्यक्ति ने उक्त सभी बन्धनों को तोड़ दिया हो वो स्वतन्त्र रूप से चलने, दौड़ने में सफल हो जाता है। **प्रेम में सफल व्यक्ति अन्य कार्य में विफल हो जाता है। जो प्रेम में विफल हो गया हो वह अन्य कार्य में सफलता प्राप्त करने की चेष्टा करता है।** मोही वहाँ नहीं पहुँच सकता जहाँ निर्मोही पहुँच जाता है। जिसे अपने जीवन के प्रति भी आसक्ति नहीं है और संसार के किसी पदार्थ से राग द्वेष नहीं है वह परम वैरागी ही मोक्ष प्राप्त करने में सफल होता है। विद्यार्थी जीवन हो या राजनैतिक जीवन, व्यापारिक दशा हो या उद्योग धन्धा, खेती का ही कार्य क्यों न हो जो किसी के प्रेम में पड़ा है वह अवसर का लाभ नहीं ले सकता, सफलता से वंचित रहता है। जो प्रेम के बन्धनों को तोड़कर आगे बढ़ गया वह चट्टान को तोड़कर बहने वाले झरने की तरह नदी बनकर सागर तक पहुँचता ही है उसे मंजिल तक पहुँचने में कोई भी बाधक नहीं बन पाता ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

आज बुद्धिमान व्यक्ति उसे माना जाता है जो साम, दाम, दण्ड,

भेद से अपना कार्य सिद्ध कर लेता है। बुद्धिमान दूसरों को ठगने में नहीं, बुद्धिमान दूसरों का दुरुपयोग करने में नहीं, बुद्धिमान तो वह है जिसमें दूसरों को कष्ट दिये बिना, धोखा दिये बिना, दुरुपयोग किये बिना अपना कार्य सिद्ध किया जा सके । बुद्धिमान वह है जिसके कार्य से खुद को व दूसरों को पुण्य का लाभ हो, अन्य शुभकृत करने की प्रेरणा प्राप्त हो। अच्छे व्यक्ति वे नहीं माने जाते जो अपनी बुद्धि की कुशलता से दिल के साफ भोले भाले व्यक्तियों को ठगते हैं। **जीवन में ठगाया जाना बुरा नहीं अपितु ठगना बुरा होता है।** जो दिल का साफ होगा, उसे कोई भी ठग सकता है किन्तु उसका अकल्याण नहीं कर सकता । दूसरों को ठग कर तत्काल में लगता है कि मेरा कार्य सिद्ध हो गया किन्तु ठगने वाला स्वयं ही ऐसा जाल बुन लेता है जिससे निकलना मुश्किल होता है। जीवन में तेज दिमागदार मत बनो, शुद्ध हृदय वाले बनो । शुद्ध हृदय किसी के लिये भी अहितकारक नहीं होता, तेज दिमाग का दुरुपयोग किया तो स्वयं को तो घातक होता ही है अन्य कितने ही व्यक्तियों के लिये घातक सिद्ध होगा ये कहा नहीं जा सकता ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

गम कब मिलते हैं ?

अपेक्षा और उपेक्षा के ताने बानों से ही संसार का वस्त्र बुना जा

सकता है, इस अपेक्षा और उपेक्षा को राग-द्वेष भी कहते हैं। राग-द्वेष निःसन्देह ही बुरे हैं। इन दोनों से राग करना भी बुरा है और द्वेष करना भी बुरा है इनके प्रति तो विरत रहने में ही भलाई है। व्यक्ति अपने जीवन में न जाने कितनी अपेक्षा पाल कर बैठ जाता है। अपनों से अपेक्षा रखता ही है, दूसरों से भी रखता है। जिसकी भलाई की है उनसे भी और जिसकी बुराई की है उससे भी भलाई की ही अपेक्षा रखता है। इसकी यह अपेक्षा ही जीवन में दुःखों का अम्बार लाती है। जितनी अपेक्षा उतना दुःख, जिसके जीवन में अपेक्षा नहीं उसे काहे का दुःख। दुःखों से बचने का एक ही उपाय है अपेक्षाओं से मुक्ति अथवा अपेक्षाओं में समभाव। जितनी गहरी अपेक्षा उतना गहरा दुःख, यह बात जब समझ आ जाती है तो बुद्धिमान अपेक्षायें कम कर देते हैं। इसीलिये कहा करते हैं...

**हृद से ज्यादा बढ़ जायें अपेक्षा तो हमेशा गम मिलते हैं।
अपने सुख शान्ति को छुपाने के लिये हम दूसरों से कम मिलते हैं।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सुख दुःख कहाँ ?

वर्तमान में प्राणी सुख-दुःख खोजने के लिये संसार में भटकते

रहते हैं किन्तु सुख-दुःख संसार में नहीं अपनी ही आत्मा में है, ज्ञानी के लिये भी और अज्ञानी के लिये भी। ज्ञानी पुरुष मोह को नष्ट कर आत्मा का अनन्त सुख प्रकट कर लेता है वह संसार में सुख खोजता नहीं क्योंकि वह जानता है सुख मेरी आत्मा का स्वभाव है, संसार का नहीं। अतः ज्ञानी की खोज सफल सार्थक होती है। ज्ञानी को जब दुःख आता है तब भी वह संसार को दोष नहीं देता, दुःख का कारण अपने कर्मों को ही मानता है। द्रव्य कर्म, भावकर्म और नो कर्म तीनों ही दुःख के कारण हैं, तीनों का कर्ता आत्मा ही है। इधर अज्ञानी भी सुख दुःख संसार में नहीं मानता। वह जिन पदार्थों के संयोग से सुख की धारणा बना चुका है उसमें ही सुख का अनुभव करता है, चाहे भले ही वह दुःख या दुःख का कारण हो। जिनके प्रति दुःख की धारणा बनाकर बैठा है उनके संयोग पर दुःख का अनुभव करता है। सुख और दुःख किसी वस्तु विशेष में नहीं उसकी धारणा में ही होते हैं। अतः सिद्ध होता है कि सुख-दुःख कहाँ है, धारणा बदलते ही सुख-दुःख बदल जाता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

भूल जाओ नहीं तो

संसार में जन्म-मरण करने वाले प्राणियों से अनेक भूल,

अपराध होते हैं किसी की दृष्टि में तुम अपराधी हो, तो तुम्हारी दृष्टि में कोई अन्य पुरुष । किसी की दृष्टि में तुम प्रशंसनीय हो, तो तुम्हारी दृष्टि में कोई अन्य । भूल, अपराध या गलती किसी से भी हो उसमें सुधार आवश्यक है। अपराध क्षम्य नहीं होते, अपराधी क्षम्य हो सकता है, इसीलिये कहा जाता है घृणा पाप से करो, पापी से नहीं । दूसरे की भूल या अपराध तुम्हारी, संक्लेशता का कारण बन रहे हैं तो तुम भी उन्हें भूल जाओ इसी में तुम्हारी भलाई है। इन व्यक्तियों को, उनकी भूल, गलती, अपराधों को यदि भूलने में असमर्थ हो तो अज्ञानी समझकर उन्हें क्षमा कर दो । तीनों लोकों, कालों में आत्मशान्ति पाने का यही सर्वप्रथम उपाय है। अन्यथा दुःख जीवन को घेर लेंगे। कहते हैं-“ **बात महत्वपूर्ण है तो इंसान को भूल जाओ और इंसान महत्वपूर्ण है तो बात भूल जाओ।,**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कायर और वीर

जन्म-मरण की चक्की में पिसते हुये सभी संसारी जीव कर्मों के फल

को भोगने को मजबूर हैं, कर्मों के फल को भोगने की सामर्थ्य हो या न हो । कर्म बांधते समय व्यक्ति स्वतन्त्र होता है किन्तु कर्म भोगते समय पराधीन। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनुकूलता भी आती है प्रतिकूलता भी । किसी के जीवन में सदा पूर्णिमा का उजाला नहीं रहता, न ही किसी के जीवन में अमावस्या का अंधकार । मनीषी पुरुष पूर्णिमा के प्रकाश को पाकर इतराते नहीं और अमावस्या के अन्धकार में घबराते नहीं। पूर्णिमा के प्रकाश का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति अमावस्या के अन्धकार को दूर करने का उपाय खोज ही लेता है। अमावस्या का अन्धकार शाश्वत नहीं है और न ही अन्धकार को दूर करना असंभव । अन्धकार को दूर करने का उपाय किया ही जाना चाहिये । प्रतिकूलता के आने पर अनेक उपाय किये जा सकते हैं। प्रतिकूलता के आने पर उपाय न करना नितान्त मूर्खता है। मूर्ख व्यक्ति (कायर व्यक्ति) युद्ध के मैदान से भागना चाहता है **बुद्धिमान व्यक्ति विषम परिस्थिति में भी रास्ता खोज लेता है जैसे जल चट्टानों में।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

जो चाहते हो उसी की प्रशंसा करो

जो दूसरों के गुणों को देखकर खुश होता है वह भविष्य में

उन्हें प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है। गुणग्राही गुणों को देखकर खुश भी होते हैं और प्रशंसा भी करते हैं। जो दोषों को देखकर खुश होता है व उनकी प्रशंसा करता है समझो वह दोषग्राही है। जो दूसरों को दुःखी देखकर हँसता है, मुस्कुराता है, प्रसन्न होता है, दूसरों के दुःखों की कामना करता है वह भी उसी अवस्था को प्राप्त होता है। जो खुशी से खुश होता है उनकी प्रशंसा करता है, स्तुति भक्ति करता है कालान्तर में उसी को प्राप्त करने का अधिकारी होता है। संसार का नियम है कि व्यक्ति जैसा दूसरे के सुख-दुःख का अनुभव करता है, वैसा ही सुख-दुःख उसे प्राप्त हो जाता है। मेरा तो आपसे इतना ही कहना है कि **दूसरों की बुराई में रस लेना बन्द करो, अच्छाई सुन कर आनन्द मनाओ** क्योंकि दूसरों की बुराई में, दुःख में कुटिलता वश जो भी आनन्द का अनुभव करता है, सम्भव है उसके कर्म उसे उसी प्रकार का फल दें। अतः दूसरों की अच्छाई में, गुणों में, सुख में मुस्कुराना सीखो तुम्हारे जीवन में सुखों की कभी कमी न आयेगी।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुजंटी

जीवन की प्रमाणिकता

संसार में दो प्रकार की शिक्षायें दी जाती हैं- एक सैद्धान्तिक और

दूसरी प्रायोगिक। सिद्धान्त की शिक्षा सिद्धान्तशास्त्र, ग्रन्थ, पुस्तक, साहित्य एवं अध्यापक आदि के प्रशिक्षण इत्यादि के निमित्त से प्राप्त होती है। प्रायोगिक या व्यवहारिक ज्ञान स्वयं के जीवन के अनुभव से सीखा जाता है यही ज्ञान प्रमाणिक होता है। शब्द ज्ञान भले ही प्रमाणिक क्यों न हो, किन्तु जीवन की प्रमाणिकता तो व्यवहार ज्ञान, अनुभव ज्ञान से ही आती है। पुस्तक का ज्ञान है काँटा लगने पर पैर में कष्ट होता है। पैर में बिवाई फटने पर दर्द होता है, ज्वर आदि से शरीर में कमजोरी आती है। यदि अत्यधिक दस्त लग जायें तो पहलवान को भी चक्कर आते हैं। इष्ट के वियोग से दुःख होता है, अपने स्नेही के मिलने पर अन्तरंग में प्रेम उमड़ता है, यथेष्ट वस्तु आनन्द देने वाली होती है, निःस्वार्थ भावना से उपकार करने से सुखानुभूति होती है। शीतकाल में अग्नि ताप सुखद होता है गर्मी में दुखद ये सब पुस्तकीय बातें हैं, जब तक इनका जीवन में अनुभव नहीं किया जाता तब तक प्रायोगिक ज्ञान नहीं होता। इस प्रकार की अग्नि परीक्षा के बिना शुद्धता की प्राप्ति असम्भव होती है अतः सिद्ध है **पुस्तक के द्वारा दी गयी शिक्षा तभी परिपक्व होती है जब वक्त उसका इम्तिहान ले लेता है।** कुम्भकार के कलश बिना अग्निपरीक्षा के जल धारण करने योग्य नहीं होते।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुजंटी

नाजुक रिश्ते

शब्दों का जंजाल मूर्खों को मोहित करता है ज्ञानी पुरुष तो

भावना को ही समझते हैं। जहाँ पर भावनाओं की कदर नहीं होती सिर्फ शब्दों को ही महत्व दिया जाता है, वहाँ पर व्यापार तो चल सकता है किन्तु पारस्परिक सम्बन्ध नहीं रिश्ते इतने नाजुक होते हैं कि अधिक शब्दों की चोट उन्हें घायल कर देती है। इन्हें भावनाओं के माध्यम से ही सम्भाला जा सकता है। शब्दों से भाषण दिये जा सकते हैं, नेतागिरी की जा सकती है किन्तु **मधुर सम्बन्धों के लिये शब्दों की कार से उतरकर भावों की पगडंडी पर चलना पड़ता है।** ये रिश्ते पक्षी के छोटे बच्चों की तरह से होते हैं। इनके साथ कठोर व्यवहार (शब्दों रूपी) नहीं किया जा सकता, अन्यथा कठोर पकड़ से बच्चे घायल हो जायेंगे या मर जायेंगे। इन रिश्ते रूपी छोटे बच्चों को लापरवाही की ज्यादा शिथिलता भी नहीं दी जा सकती, उदासीनता रूपी मुट्ठियों को खोला भी नहीं जा सकता अन्यथा वे उड़ जायेंगे। इन्हें तो केवल प्यार से सहलाने की आवश्यकता होती है। न कसकर पकड़ना है न उपेक्षा करनी है प्यार की डोर में बंधे पक्षी उड़ान के बावजूद वापस आ ही जायेंगे।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कुछ भी नहीं असम्भव

कुछ लोगों की आदत होती है काम करने के पहले ही कहने

लगते हैं कि ये असंभव है। वो प्रायः करके छोटे से छोटे कार्य को भी असंभव कहने लगते हैं और यह भी सत्य है कि जब व्यक्ति किसी कार्य के लिये असंभव की धारणा बना लेता है, तब उसके लिये उस कार्य का कर पाना असम्भव ही हो जाता है। किसी का अत्यन्त प्रेरक निमित्त मिल जाये तो वह उसे अत्यन्त कठिनाई से ही सम्पन्न कर पायेगा। संसार में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो हर कार्य के लिये कहते हैं, यह तो बहुत सरल है, बड़ा आसान है, बाँये हाथ का खेल है, चुटकियों में कर दूँगा। कितना भी बड़ा काम हो वे घबराते नहीं तब उनके लिये असम्भव कार्य भी सम्भव बन जाता है। एक हाथी भले ही अपने बराबर वजन को न ढो सके, किन्तु एक चींटी स्वयं के वजन से तीन गुने वजन को भी उठा ले जाती है। व्यक्ति इस धारणा से जिये कि संसार में कुछ भी असंभव नहीं। जो कार्य किसी एक के द्वारा संभव है वो मेरे द्वारा भी संभव है। **असंभव की सीमा के पार हुआ व्यक्ति सदैव संभव के क्षेत्र में ही रहता है।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

मेले में अकेले

दुनियाँ के शाश्वत सिद्धान्तों को कोई झुटला नहीं सकता किसी के भी द्वारा झुटलाने की कोशिशें नाकामयाब ही सिद्ध होती हैं जैसे सूर्य पूर्व से निकलता है और अस्त पश्चिम में इस बात को कौन झुटला सकता है। कोई कितने भी तर्क दे किन्तु सुख, आत्मीय शान्ति -बाह्य साधनों से नहीं संयम साधना से प्राप्त होती है। पाप का फल दुःख, पुण्य का फल परम्परा से सुख ही होता है, प्रत्येक जन्मे की मृत्यु नियामक है। पुद्गल कभी जीव, जीव कभी पुद्गल नहीं हो सकता। इन सिद्धान्तों को झुटलाने का साहस क्या किसी में है? इसी तरह आप जानते हैं प्रत्येक व्यक्ति अपने ही पुण्य पाप का फल भोगता है वो अकेला था, है और रहेगा। एकत्व स्वभाव को झुटलाने के लिये भीड़ में खड़ा भी हो जाये तो क्या होने वाला है। भीड़, भीड़ रूप में दिखते हुये भी प्रत्येक व्यक्ति अपने -अपने अस्तित्व के साथ जी रहा है। एक थाल में भरे हुये रत्नों का ढेर एक दिखता है किन्तु है नहीं। अनाज की राशि का ढेर एक दिखता है किन्तु हैं सब दाने अलग -अलग। इसलिये कहा जाता है **तू भीड़ का इन्तजार मत कर, भीड़ कभी किसी का साथ नहीं देती अपने साहस को बटोरकर उठ, तू नियम से मंजिल तक पहुँचेगा, यदि अकेला ही चलेगा तब।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

रिश्ते कैसे

संसार में जितने भी प्राणी दिखायी देते हैं उनमें सभी सरागी, एक दूसरे से सहज प्रेम में जुड़े दिखायी देते हैं वास्तव में ऐसा है नहीं। यदि कोई भी व्यक्ति किसी भी वस्तु या व्यक्ति से प्रेम करता है, चाहता है, तो समझो उसमें कहीं न कहीं स्वार्थ है। हम समझते हैं लोग हम पर प्राण न्यौछावर करते हैं या हम किसी पर प्राण न्यौछावर करते हैं किन्तु किसी के लिये कोई प्राण न्यौछावर नहीं करता। सबके अपने -अपने स्वार्थ होते हैं। किसी को धन का, किसी को यश का, किसी को मान सम्मान का स्वार्थ है तो किसी को प्रतिष्ठा का, किसी को सत्ता का स्वार्थ होता है तो किसी को सुरक्षा का, तो किसी को आरोग्य का, किसी को भौतिक सुखों का, किसी को संगी साथी का, किसी को व्यवस्था का स्वार्थ है, स्वार्थ की चादर संसार में सबके ऊपर पड़ी है। ऐसा व्यक्ति खोजना कठिन है जो स्वार्थ के मेघ से न भीगा हो। हर एक दूसरे को चाहने वाले स्वार्थ के अन्धकार में खड़े हैं तभी चाहते हैं। स्वार्थ की सीमा रेखा से दूर, न कोई किसी को चाहता है, न ही मन में ऐसी इच्छा रखता है कि कोई उसे चाहे। वर्तमान काल के रिश्तों के बीच स्वार्थ की सांकल बनी है यदि तोड़ दी जाये तो सब अकेले हैं।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

ठण्डा सबको काटता है

यह तो सर्वविदित है कि ठण्डा लोहा ठण्डे लोहे को भी काटता है

गर्म लोहे को भी । गर्म लोहे ने न तो गर्म को काटा है न ही ठण्डे लोहे को। इस बात को कौन नहीं जानता जो गर्म होता है वही पीटता है। ठण्डा पीटकर भी शान्त रहता है, ठण्डे को कभी कोई पीटता ही नहीं । ठण्डे में यदि कोई दोष आ जाये और पीटने की नौबत आ जाये तो पहले गर्म ही करना पड़ता है बात यहीं पर समाप्त नहीं होती, इस बात को बताकर कहने का आशय है जो प्राणी कषाय के आवेश में उबल रहे हैं क्रोध की अग्नि में जल रहे हैं, लाल पीले हो रहे हैं, वे सदा पीटते चले जाते हैं क्षमाशील मनुष्य को कौन पीट सकता है, क्षमाशील का कभी कोई अहित नहीं कर सकता क्षमाशील को गर्म कर पाना बड़ा कठिन काम है। शत्रु कितना भी लाल पीला होकर आ जाये, किन्तु वह फिर भी लाल पीला नहीं होता हथौड़ा तो ठण्डा ही होता है जिस तरह लोहे की छड़ कितनी भी लाल हो उसे पीटने वाला हथौड़ा ठण्डा ही होता है। इसलिये पीट भी देता है और लाल भी नहीं होता। **तुम दुनिया को मात देना चाहते हो तो क्रोध से नहीं क्षमा से दे सकते हो।** क्रोध से तो तुम सबकी ठोकर ही खा सकते हो ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कल का आज, आज का कल

संसार में विद्यमान प्रत्येक प्राणी अपने द्वारा किये हुए पुण्य

तथा पाप कर्मों को नियम से भोगते ही हैं। यह शाश्वत सिद्धान्त है प्राणी के द्वारा जैसा कर्म किया जाता है, फल भी वैसा ही प्राप्त होता है। कोई व्यक्ति पहले परिश्रम करता है बाद में फल भोगता है, दूसरा व्यक्ति पहले फल भोगता है बाद में परिश्रम करता है। एक किसान परिश्रम करके खेती से उत्पन्न फसल को प्राप्त करता है दूसरा किसान कर्ज लेकर खेती करता है उसकी फसल कर्ज चुकाने में चली जाती है अर्थात् फसल को वह पहले खा चुका । एक कर्मचारी पहले वेतन ले लेता है और एक बाद में वेतन लेता है। एक व्यक्ति ने मकान के लिए लोन लिया और न चुका पाने में मकान बेचा, मकान का पैसा वह पहले ही खा चुका । दूसरे ने परिश्रम से मकान बनाया अब चैन से रहता है। संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो पहले परिश्रम करते हैं व बाद में आनंद लेते हैं **जो पसीना बहाने से जी चुराते हैं उन्हें बाद में आँसू बहाने पड़ते हैं** आँसू से अच्छा है कि पहले पसीना बहा लिया जाए ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

मंजिलों की फितरत

संसार में दो प्रकार के प्राणी होते हैं एक उद्यमशील दूसरे

आलसी । उद्यमशील को पुरुषार्थवादी कहा जाता है, और आलसियों को भाग्यवादी । भाग्य विपरीत हो तो पुरुषार्थ विशेष कार्यकारी नहीं होता, भाग्य अनुकूल हो तो अल्प पुरुषार्थ से भी काम हो जाता है। बिना पुरुषार्थ के संसार में कुछ नहीं होता । कहा जाता है “उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः” उद्यमशील के कार्यों की सिद्धि होती है, केवल अभिलाषा से नहीं । उद्यमशील चींटी हजारों मील चली जाती है न चलता हुआ गरुड़ पक्षी एक कदम भी नहीं चल सकता । उद्यमशील चींटी दीवार, शिखर, पर्वतों पर पहुँच जाती है किन्तु आलसी समतल पर भी नहीं चल पाता । संसार में जितनी भी सफलता और कार्य सिद्धि हैं सब उद्यमशील के लिये ही हैं, भाग्यवादी के लिये नहीं । एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दूसरी बात ये भी है कि बिना पुरुषार्थ के भाग्य का निर्माण भी नहीं होता । अतः भाग्यवादी तो भूखा बैठा रहता है और पुरुषार्थी लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं। ऐसी कौन सी मंजिल है जो चलने वाले को प्राप्त नहीं हुई है और ऐसी कौन सी मंजिल है जो बिना चले प्राप्त होती हो । अर्थात् संसार में ऐसी कोई मंजिल नहीं जो चलने पर प्राप्त न हो । यहाँ चलने का अर्थ उद्यमशीलता से है। **चलोगे तो ही मंजिल मिलेगी क्योंकि मंजिल की फितरत है कि वे चला नहीं करती।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सार्थक है “मौन”

जीवन में खामोशी कई बार बोलने से भी ज्यादा लाभदायक

हो जाती है। जीवन में मौन वहीं नहीं रखना चाहिये जहाँ सभी आपसे बड़े और पूज्य हों बल्कि जो आपकी बात को बड़े आदर सम्मान से सुनते हों फिर भी वहाँ पर मौन तब तक रहना चाहिये जब तक कोई पूछे न । मौन की वहाँ तो परम आवश्यकता होती है जहाँ कोई तुम्हारी भाषा, व्यवहार जानने वाला न हो । मौन की भाषा, परिभाषा शब्दों से परे सर्वोत्कृष्ट है। जहाँ के व्यक्ति अपनी हैसियत या गुणों की प्रशंसा कर रहे हों, वहाँ पर गुण निधि को मौन ही रहना चाहिये । जहाँ भाषा या बात को समझने वाला न हो वहाँ बोलना वैसा ही होगा कि “भैंस के आगे बीन बजाना” । रहीम का दोहा कितना सार्थक है :-

**पावस देख रहीम अब, कोयल साधो मौन ।
अब दादुर वक्ता भये, हमको पूछे कौन ॥**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

दृष्टि का फेर

कौ रवों को उस गाँव में कोई अच्छा व्यक्ति नहीं मिला, जिस

गाँव में पांडवों को कोई बुरा नहीं मिला। कोई कहता है गिलास आधा खाली है तो कोई कहता है आधा भरा। एक व्यक्ति कहता है विधाता का अन्याय तो देखो दो रात के बीच एक दिन बनाया, दूसरा कहता है खुदा तेरा लाख - लाख शुक्र है दो दिनों के बीच बस एक रात। वस्तु वही होती है नजरिया अलग - अलग होता है एक को हाथी की पूँछ तो दूसरे को सूँड दिखती है। एक नदी के एक किनारे को देखता है तो दूसरे को दूसरा। सत्यता तो ये है संसार में न कोई सुन्दर है, न कोई असुन्दर, न कोई अच्छा है, न बुरा। जो जैसा है वैसा है इसलिये तो कहा जाता है **सुन्दरता न सूरत में होती है न लिबास में, वह तो देखने वालों की आँखों में होती है**, एक व्यक्ति को जो बहुत अच्छा लगता है वह दूसरे को बुरा। यदि बुरा होता तो सबको बुरा लगता और सर्वथा अच्छा होता तो सबको अच्छा लगता इसीलिये आचार्यों ने लिखा है आप तो दृष्टि बदलो सृष्टि अपने आप बदल जायेगी।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

प्रभुता का शासक 'लघु'

एक छोटी सी बात समुन्दर को ऐसी खल गयी,
कागज की नाव मेरे ऊपर चल गयी।

संसार में अहंकार किसी का नहीं रहा। यदि बड़े व्यक्ति ने किसी बड़े को पराजित कर दिया तो कौन आश्चर्य है यह तो सहज है दो पहलवानों में एक ही जीतेगा किन्तु जिसका अल्प अस्तित्व हो वह बड़े को धराशायी कर दे या उसकी असलीयत उसे दिखा दे तब सबको आश्चर्य होता ही है। हाथी द्वारा हाथी का पराजित होना सामान्य बात है किन्तु चींटी द्वारा हाथी को पराजित किया जाये तो किसको आश्चर्य न होगा। इससे एक बात तो तय है बड़ों को जीतने के दो उपाय हैं, एक यह है आप इतने बड़े बन जाओ कि आप उसे मुट्ठी में पकड़ सको। अगर आप ऐसे नहीं बन पा रहे तो दूसरा उपाय ये है कि आप इतने छोटे बन जाओ कि वह किसी भी तरह तुम्हें न पकड़ सके। लघुता प्रभुता पर भी राज कर लेती है **बड़े को अपना बनाने का राज (गूढ़ रहस्य) है आप उनके सामने लघु बनो**। छोटी सी बिन्दी युवती के मस्तक पर सवार होती है और खडुवा पैरों में पहने जाते हैं।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

ऐसी भी बुलंदी

बताते हैं जब उसके पास सोने का एक सिक्का था तो उसकी कीमत सौ रुपये थी दो सिक्के होने पर प्रत्येक की कीमत पचास हो गयी, चार सिक्के होने पर प्रत्येक की कीमत पच्चीस, दस सिक्के होने पर प्रत्येक की कीमत दस रह गयी, सौ सिक्के सोने के होने पर प्रत्येक की कीमत एक रुपया रह गयी, अब तो लोग कहने लगे हैं, उसके पास सोने के हजार सिक्के हैं, मैंने जब उनका मूल्य पूछा तो धीमे से बोला प्रत्येक का मूल्य पाँच पैसे है। मुझे सुन के बड़ा आश्चर्य हुआ, मैंने पूछा ऐसे कैसे? वे धीमे से बोले, जो जितना ज्यादा माल खरीदता है उसमें उतना ज्यादा नकलीपन होता है। इसको सुनके मन में ख्याल आया वर्तमान में मानव की नीति ऐसी तो नहीं हो गयी। आज व्यक्ति बोरा भर के नोट ले कर बाजार जाता है और मुट्ठी भर सामान लाता है। हमने तो सुना है कि लोग मुट्ठी में पैसा ले जाते थे और बोरा भर के सामान लाते थे। आज मानवों की संख्या तो बढ़ रही है परन्तु मानवता कितनी है सो आप ही देख लो। ये दो पंक्ति मुझे बहुत अच्छी लगती हैं।

**वो बुलंदी किस काम की महाशय।
इंसान चोटी चढ़े और इंसानियत गर्त में गिरे ॥**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

नाकाम कोशिश

एक बात मेरी समझ में नहीं आती लोग तांबे पर सोने की पॉलिश क्यों कराते हैं क्या उस पॉलिश से वे आभूषण सोने के हो जाते हैं? फटे पुराने जूतों पर अच्छी पॉलिश से क्या वे नये हो जायेंगे? जीर्ण शीर्ण कपड़ों पर कैसी भी प्रेस कर लो रहेंगे तो पुराने ही न, पुराने खण्डहरों पर कितनी भी अच्छी टाईल लगा दो वे नूतन महल न बन जायेंगे। वृद्ध पुरुष बालकों के कपड़े पहन कर, बालों को डाई कराकर यदि युवाओं के एक्शन में चलेंगे तो क्या वे युवा हो जायेंगे या कोई प्रोढ़ा या वृद्धा बालिका की तरह फ्रॉक या सलवार सूट पहन ले तो क्या वे सोलह साल की हो जायेंगी। न जाने व्यक्ति की कैसी मानसिकता बन रही है बिना नहाये हुये चेहरे पर क्रीम बालों में कंधी से ही स्मार्ट बनना चाहते हैं। महानुभाव ! यह तो आपके दिमाग में दूसरों को ठगने की कहानी है या धोखा देने के तरीके हैं किन्तु सत्यता ये है धोखा आप किसी और को नहीं दे रहे अपितु अपने आप को छल रहे हो चन्द्रमा की परछाई को चन्द्रमा समझ रहे हो। इसलिये आज के दौर में ये कहना अनुचित न होगा -

**खुशी तो सिर्फ दिखाने भर की है।
वर्ना आदमी में बेचैनी तो जमाने भर की है॥**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कब होंगे केश “श्याम से श्वेत”

बचपना, शरारतें, भूल, गलतियाँ और अपराधों को करने की उम्र

होती है एक निश्चित स्थान होता है या कोई विशेष वातावरण होता है। किसी व्यक्ति के द्वारा की गयी भूल हर समय और हर स्थान पर बर्दाश्त नहीं की जा सकती। कभी-कभी छोटों की भूल भी अक्षम्य हो जाती है तो कभी बड़ों की भूल भी माफ कर दी जाती है। प्रारम्भिक दशा में भूल होना संभव है किन्तु शनैः-शनैः अभ्यास के बल से भूल, गलती, अपराध से युक्त भी हो जाती है। अनुभव, अनुभव के तरीके से ही आता है। सौ वर्ष का अनुभव एक दिन में हस्तगत नहीं किया जा सकता। जो पौधा बीस साल में फल देने के योग्य होता है क्या उससे बीस घंटे में फल लिये जा सकते हैं? एक स्वस्थ बालक का जन्म गर्भ से लगभग नौ महीने में ही होता है क्या कोई विशेष तकनीकी से नौ सैकेण्ड में कर सकता है? महानुभाव ! इन बालों को पकाने में अनुपम अनुभव प्राप्त करने में पूरी उम्र बीत जाती है किन्तु इन्हें कोई काला करना चाहे (कृत्रिम प्रकार से) तो एक घड़ी का समय भी पर्याप्त होता है अर्थात् क्षमावान् गम्भीर, उदार, कष्ट सहिष्णु एवं परोपकारी बनने के लिये निर्मल चारित्र और निर्दोष व्यक्तित्व बनाने के लिये पूरा जीवन अभ्यास करना पड़ता है किन्तु उसके विपरीत दोषों को जागृत करने के लिये क्षण भर पर्याप्त है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

फर्श से अर्श

जीवन में समान पहलवानों की कुश्ती तो कई बार देखी है उसमें

कोई भी हार जाये या जीत जाये किसी को आश्चर्य नहीं होता आश्चर्य तो तब होता है जब तेज स्पीड वाली मोटरसाइकिल से साइकिल आगे निकल जाये। खरगोश - कछुआ की दौड़ में कछुआ जीत जाये। जिसके शत प्रतिशत हारने की धारणा बना चुकी हो यदि वह बाजी जीत जाये। वह डॉक्टर वास्तव में तारीफ के काबिल होता है जिस रोगी को सभी डॉक्टरों ने मृतक मान के वापस कर दिया हो उसे यदि कोई डॉक्टर ठीक कर दे। अरुणिमा का ऐवरेस्ट पर चढ़ना, सुधा चन्द्रन का नृत्य में सर्वश्रेष्ठ होना, विल्मा रूडोल्फ का ओलंपिक में लगातार 3 स्वर्ण पदक जीतना, निक म्यूजीकिक का अपने सब कार्यों को सम्पन्न करना, मदन मोहन (जिसके दोनो हाथ नहीं हैं) सूई में धागा डालना, स्वामी नारायण की झाँकी में बने बालक को स्वामी नारायण का पार्ट अदा करना, रिक्शा चालक के पुत्र का आई.ए.एस बनना, एक निर्धन विधवा के बेटे का कम्पनी का मालिक होना, चाय बेचने वाला प्रधानमंत्री होना इन सब उदाहरणों से सिद्ध होता है कि जिसके बारे में चाहे कोई भी गलत धारणा बना के बैठ जाये किन्तु उसमें यदि जुनून सवार हो जाये तो वह बहुत बड़ा लक्ष्य प्राप्त कर लेता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कैसे मरते हैं मौत से पहले

दिन और रात का चक्र तब तक चलता रहेगा जब तक सूर्य

चन्द्रमा गगन में घूमते रहेंगे। ऋतुओं का परिवर्तन भी स्वाभाविक होता रहता है, जन्म- मृत्यु का सिलसिला भी इसी तरह है जिसने जन्म लिया उसे मरना तो पड़ता ही है। मरने वाले का जन्म हो न हो इसे नियामक नहीं कहा जा सकता क्योंकि कर्म से रहित का कभी जन्म नहीं होता और कर्म से सहित की मुक्ति नहीं होती। कई बार मृत्यु के समय में लोगों को हँसते मुस्कुराते देखा है, जैसे मृत्यु उन्हें मारने में असमर्थ हो रही हो। व्यक्ति जब तक न मरना चाहे तब तक मृत्यु उसे मार नहीं सकती। जो जीवन जीने के लिये दृढ़ संकल्पित होते हैं, मौत भी प्रणाम करके लौट जाती है। मौत के समय मुस्कुराना, निःसीम आनंद का अनुभव करना यह इस बात का प्रतीक है कि ये व्यक्ति मर नहीं रहा जिन्दगी में जीवन का आनंद लिया अब मृत्यु का आनंद ले रहा है। मौत तो उनकी आती है जिनके अरमान टूट जाते हैं। जिनको हृदय में बसा कर रखा था वे टूट जाते हैं जो आँखों में समाये थे आँसूओं की तरह टपक कर रूठ जाते हैं या अपने ही सुरक्षा कवच अपनों के द्वारा ही टूट जाते हैं जैसे किसी पक्षी के अण्डे जो उसने जीवन में पहली बार और प्रौढ़ अवस्था में दिये हों वे जब फूट जाते हैं तो वह पक्षी जीवन में मृत्यु का एहसास करता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

‘उद्देश्य’ उद्देश्य भरा जीवन

प्रत्येक विवेकशील प्राणी अपने जीवन में कोई न कोई उद्देश्य बना

कर रखता है। निरुद्देश्य साधना, कार्य, गमन, पठन, पाठन, पूजन, अर्चन इत्यादि कोई भी कार्य करने वाला व्यक्ति बुद्धिमान नहीं कहा जाता। उद्देश्यहीन जीवन बिना डोर की पतंग है या बिना ब्रेक की गाड़ी या बिना पटरी के ट्रेन, अंतरिक्ष में भटकते यान, कोल्हू का बैल। मानव बुद्धिजीवी माना जाता है परन्तु जीवन में सम्यक् उद्देश्य होना चाहिये केवल उद्देश्य ही नहीं उसे प्राप्त करने के लिये समुचित विधि की अनुपालना भी होना चाहिये। प्रत्येक प्राणी का अपना अलग-अलग उद्देश्य होता है उसे पूर्ण करने के लिये सब पुरुषार्थ भी करते हैं। हमने तो अपने जीवन का इस प्रकार का कोई उद्देश्य चुना ही नहीं। हम तो बस यही भावना भाते हैं और अपना उद्देश्य भी यही बनाते हैं कि हमारा कोई भी जीवन निरुद्देश्य कभी न हो, हमारा उद्देश्य है कि उद्देश्य से भरा जीवन हो।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

खेल हकीकत नहीं

इस दुनिया का भी क्या अजब व्यवहार है यह असली छोड़कर नकली को पूजती है यथार्थ सन्त आ जायें तो उपसर्ग किये बिना न मानेंगे और फोटो मिल जाये तो आठ द्रव्य से पूजा करेंगे। जिसने जीते जी पिता को पानी नहीं पिलाया मरने के उपरान्त उसके लिये दावत कर रहा है। काश जीते जी उसे अपने कमरे में स्थान दिया होता तो तुझे याद में कमरा न बनाना पड़ता। संसार की क्या विडम्बना है इसमें जो बात खेल की तरह भूल जाना चाहिये उसे हकीकत मानते हैं जो आत्मा का स्वरूप समझने वाला है, जिस पुण्य का आश्रय लेना चाहिये उसे खेल की तरह टाल देते हैं। नश्वर को अविनश्वर, नित्य को अनित्य मान लेना कितनी हँसी की बात है। विश्वकप में खेलने वाले खिलाड़ी उसे यथार्थ मानकर अपना जीवन दाँव पर लगा देते हैं असली जीवन को खेल की तरह लेते हैं बस मेरा तो इतना ही संकेत है खेल को खेल समझो और हकीकत को हकीकत।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

गुलामी की वेदना

मुझे ऐसा लगता है जैसे दुनियाँ बहरी हो क्योंकि बोलने वालों की बात सुनती ही नहीं कोई लोग कितने ही चिल्लाये, नगाड़े बजाये किन्तु ऊँचे सिंहासन पर बैठने वाले, लगता है या तो ऊँचा सुनते हैं या बहरे हैं। एक नौकर सौ बार मालिक को कोई बात कहता है फिर भी मालिक नहीं सुनता। कई बार बच्चों की बात को उनके अभिभावक कहाँ सुन पाते हैं। दूसरी ओर देखें बड़े लोग छोटों को कोई आदेश, निर्देश, संकेत करें या न करें, किसी बात पर मौन भी हो जायें तब भी छोटों को तो सुनना ही पड़ता है। चाहे बात बड़े की गलती से बिगड़ी हो फिर भी छोटे को सुनना ही पड़ता है। युद्ध दो राजाओं में होना है राजा हारे या जीते मरती तो सेना ही है। पर्वतों को तोड़कर कोई बालू नहीं बनाता, छोटे-छोटे कंकर पीसे जाते हैं और चूना बनता है। गुलामी सबसे बड़ा दुःख है, वह भी ऐसा दुःख जिसे कहा नहीं जाता, सहा जाता है, फिर भी गुलाम बनकर रहना ही पड़ता है। बड़ा व्यक्ति वही हो सकता है जो छोटों की पीड़ा को समझने में समर्थ है और स्वतन्त्र वह है जो किसी को गुलाम बनाने की आकांक्षा ही न रखे।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

एक की सुरक्षा में अनेक

संसार पारस्परिक प्रेम, विश्वास, व्यवहार से चलता है। व्यक्ति एक दूसरे का रक्षक एवं सहयोगी होता है पहला दूसरे का रक्षक तो दूसरा पहले का रक्षक होता है। जो किसी का रक्षक नहीं होता उसके पास भी रक्षकों की कमी ही होती है। जो सभी की रक्षा का भाव रखता है वह सम्भवतः सभी के द्वारा रक्षित होता है। राजा की रक्षा में सम्पूर्ण प्रजा तत्पर रहती है प्रजा के प्राण उसकी छत्र छाया बनकर रहते हैं किन्तु अकेला राजा ही पूरी प्रजा का संरक्षण करने में समर्थ होता है। राजा के अधीन प्रजा निश्चित होती है प्रजा के द्वारा सेवित राजा भी सुरक्षित होता है इसलिये कहा है, एक की रक्षा में हजारों हाथ और हजारों की रक्षा में एक हाथ। कदाचित् राजा की मृत्यु होने पर पूरी प्रजा असुरक्षित और दिशा विहीन हो जाती है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

दुनियाँ की अजब कहानी

प्राणी के जीवन में अनादि काल से संसार परिभ्रमण के संस्कार इस तरह भरे पड़े हैं कि अच्छे संस्कारों का बीजारोपण कर पाना अत्यन्त कठिन है। जिस प्रकार अग्नि और जल एक साथ नहीं रह सकते, हँसना और मुँह फुलाना दोनों एक साथ नहीं हो सकते, दाँये और बाँये दोनों ओर एक साथ नहीं मुड़ सकते, आगे पीछे एक साथ नहीं चल सकते उसी प्रकार संसार संवर्धन और मोक्ष प्राप्ति के संस्कार एक साथ फलीभूत नहीं हो सकते। दुनियाँ की क्या अजब नीति है उससे जिस काम को मना करो उसे पहले करेगी जिसे कहें उसे नहीं करेगी, जिसका त्याग करना जरूरी है उसे ग्रहण करेगी और जिसका ग्रहण करना जरूरी है उसका त्याग कर देगी, जो सुनना जरूरी है उसे न सुनेगी जिसका सुनना उसके लिये ठीक नहीं उसे जरूर सुनेगी। जो नहीं बोलना उसे बोलेगी जो बोलना चाहिये उसे न बोलेगी, जिसकी पूजा करना चाहिये न करेगी और जिसकी नहीं करनी चाहिये उसकी करेगी। जिसे प्रेम करनी चाहिये उससे घृणा और जिससे घृणा करना चाहिये उसे प्रेम। जब तक स्वयं न समझना चाहे तब तक कोई उसे नहीं समझा सकता। देखो यह उसे देख लेती है जिसे हम दिखाना नहीं चाहते और जिसे दिखाने की कोशिश करते हैं उसे तो कोई देखना ही नहीं चाहती। वाह रे वाह दुनियाँ तेरी क्या अजब कहानी है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

आइना दिखाना छोड़ो

प्रायः करके देखा जाता है अच्छे कार्यकर्ता अपने कार्य की डींग नहीं हाँकते। अच्छे वक्ता को चिल्ला - चिल्ला कर नहीं बोलना पड़ता, उनकी मृदु वाणी को सुनने के लिये लोग तरसते हैं। अच्छे वक्ता श्रोताओं की संख्या अच्छी नहीं, अच्छे श्रोता चाहते हैं अर्थात् उनकी दृष्टि Quantity पर नहीं Quality पर होती है। अच्छा वैद्य या डाक्टर मरीजों के पास जाकर विज्ञापन नहीं करते बल्कि उन्हें मरीज स्वयं ही खोजते हैं। संसार में दूसरों की प्रशंसा करने वाले कम, स्वयं को उपस्थित करने वाले ज्यादा होते हैं तथा संसार में दूसरों की निन्दा करने वाले ज्यादा और स्वात्मनिन्दा करने वाले कम होते हैं। दूसरों की गलती देखने से स्वयं का सुधार नहीं होता और दूसरों को उनकी गलती दिखाने से भी सुधार नहीं होता। आत्मा का सुधार तो दूसरों की अच्छाई और स्वयं की बुराई देखने से होता है, यदि आपके मन में अपनी आत्मा का कल्याण करने की भावना जगी है तो कुछ समय निकालकर अपनी गलतियों को खोजने का कार्य कीजिये इससे दूसरों को आदर्श का आइना दिखाने की आदत छूट जायेगी।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सोच अपनी - अपनी

जो प्राणी अपने जीवन में नकारात्मक सोच को साथ लेकर चलते हैं

वे अपने जीवन की सफलता को असफलता में बदल लेते हैं उनकी विजय होने पर भी वो उसका महोत्सव नहीं मनाते अपितु पराजय जैसा मातम मनाते हैं और दूसरी ओर जो सकारात्मक सोच लेकर चलते हैं वे हार को भी विजय में बदलने में समर्थ हो जाते हैं तथा हार होने पर भी वे ना उम्मीद नहीं होते उनके हौंसले फिर भी बुलंद होते हैं। वे जानते हैं जीवन में शुक्ल पक्ष का प्रारम्भ अमावस्या के बाद ही होता है। जिसका जीवन पूर्णमासी के चन्द्रमा पर पहुँच गया हो उसके जीवन में तो कृष्ण पक्ष का प्रारम्भ होता ही है किन्तु सकारात्मक सोच वाले शुक्ल और कृष्ण पक्ष दोनों ही पक्षों में चन्द्रमा की चाँदनी का लाभ उठाते हैं और नकारात्मक सोच वाले दोनों पक्षों में निहित अन्धकार को देखकर केवल दुःख का ही अनुभव करते रहते हैं। जैसे सूर्य से अन्धकार भागता है वैसे ही सकारात्मक सोच से प्रतिकूलता भागती है, जैसे रात्रि में सूर्य का उदय नहीं होता उसी प्रकार नकारात्मक सोच वाले के जीवन में खुशी की किरण नहीं आती। जीवन एक नदी है और सकारात्मक सोच रूपी निर्मल नीर होने पर ही नदी में खुशी की लहर आती है, नकारात्मक सोच है सूखी नदी में बालू का ढेर, कर्मों की हवा चलने पर सूखी नदी में जल की लहरों का आनंद नहीं लिया जा सकता।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

संगठन हो अच्छों का

सं गठित जीवन दुःख और अशान्ति से बचने का उपाय तो है ही

सुख और शांति करने वाला भी है। संगठित जीवन में शक्ति का संचय होता है, सद्भावनाओं के विकास की सम्भावना भी रहती है। घृणा, द्वेष व वैमनस्य का मल भी तिरोहित हो जाता है। अनेक फूलों से गूंथी हुई माला किसी के भी गले की सुन्दरता बढ़ा सकती है किन्तु वही टूट जाये और पुष्पों की पांखुड़ी बिखर जाये तो कूड़ा - कचरा नजर आता है। संगठित धागों से वस्त्र बन जाता है इससे सर्दी, गर्मी, बरसात से सुरक्षा की जा सकती है एवं अपनी इज्जत प्रतिष्ठा भी स्थापित की जा सकती है इसी वस्त्र के धागे अलग -अलग होने पर कूड़े कचरे की तरह होते हैं। संगठित ईंटें महलों का रूप ले लेती हैं किन्तु बिखरा हुआ मलवे का ढेर कचड़ा ही है। पंक्तिबद्ध संगठित पौधे फुलवारी या वाटिका कहलाती है किन्तु बिखरे हुये झाड़ - झंकार कहलाते हैं। । अनेक सीकों से बना झाड़ू कचरे को अलग करने में समर्थ होता है किन्तु वही बिखर जाये तो स्वयं कचरा दिखाई देता है। **अच्छे मानवों का संगठन बिखारी मानवता को संगठित व सुरक्षित करने में समर्थ होता है किन्तु उनका विद्रोह, टकराव मानवता के लिये खतरनाक सिद्ध होता है।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

बढ़ाओ आकार मन का

को ई भी व्यक्ति कद, पद व मद से महान नहीं होता, उसकी महानता

उसकी सज्जनता, सौजन्यता, सम्यक् श्रद्धा, भक्ति, मानवता, सरसता, सरलता, सहजता, क्षमाशीलता, विनम्रता, सत्यता, आत्मानुशासन, विवेकशीलता, वात्सल्यता, मैत्री, प्रमोद, त्याग, तपस्या, शान्ति, सन्तोष, सौम्यता एवं समता आदि गुणों से ही व्यक्ति महान होता है। जो महान पुरुष होते हैं वे अपने से छोटों के बीच बैठने में कभी भी शर्म, संकोच, हिचकिचाहट नहीं करते अर्थात् वे जब बैठते हैं तो उनके साथ सभी प्राणी ऐसे ही बैठ जाते हैं जैसे माँ के पास उसके बच्चे, वीतरागी भगवान के समोशरण में सभी प्राणी । अच्छा मानव अपने मन से इतना उदार होता है कि वह दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति मानता है अपने निर्मल चित्त और आत्मा के अन्य विशिष्ट गुणों के कारण दूसरों को भी अपने ही समान बना लेता है। उसकी उदारता दूसरों के उठाने में अर्थात् उन्नति में ही है अतः आप अपना कद इतना छोटा बनायें कि छोटे से छोटे के बीच में भी आप बैठ जायें और आप अपना मन इतना बड़ा बनाइये कि सारा विश्व, संसार का प्रत्येक प्राणी बड़े से बड़ा प्राणी भी आपके हृदय में पूरी ऊँचाई के साथ खड़ा हो सके ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

हैसियत नहीं दिल देखो

ऐसा माना जाता है कि संसार में बड़े - बड़े दानी, अमीर सेठ,

साहूकार राजा - महाराजा हैं। आज के इस दौर में कोई भी अपने आपको छोटा नहीं मानता सभी अपने आप को बड़ा मानते हैं। छोटा व्यक्ति अपना मूल्यांकन स्वयं करता है बड़े को मूल्यांकन करने की आवश्यकता नहीं। इस संसार में बड़ा व्यक्ति है कौन ? क्या जिसकी बहुत बड़ी हवेली है वह बड़ा आदमी है या जिसकी फैक्ट्रियाँ हैं या जिसके पास बहुत वाहन हैं वह बड़ा आदमी है या बड़ा अधिकारी, शासक या राजा बड़ा आदमी है या वह जिसके अधीनस्थ हजारों कर्मचारी हैं वह बड़ा आदमी है या जो कहता है मेरे करोड़ों भक्त हैं वह बड़ा आदमी है। जिसके पास बहुत पत्नी है वह बड़ा आदमी है जिसके पास प्रचुर मात्रा में भोग सामग्री है वह बड़ा आदमी है या भोग विलासिता वाला बड़ा आदमी है, मेरी दृष्टि में बड़ा आदमी वह है जिसमें बड़प्पन हो और इंसान में बड़प्पन आता है गुणों के माध्यम से। बहुत ज्यादा पूजा करके धर्मात्मा नहीं हो जाता, ईमानदारी से कमाई चार रोटी में से एक का दान देने वाला बड़ा आदमी हो सकता है, निः स्वार्थ भावना से दूसरों की सेवा करने वाला बड़ा आदमी हो सकता है दूसरों के लिये समर्पण करने वाला भी बड़ा आदमी हो सकता है। धर्म का सम्बन्ध धन से नहीं शुद्ध हृदय से है। किसी से कुछ लेना है तो हैसियत नहीं दिल देखो, **दुनियाँ में दिल वाले देने में समर्थ होते हैं हैसियत वाले नहीं।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कल पे सवाल है

कुछ प्राणी जो अतीत की स्मृतियों में जीते हैं वर्तमान काल को भी

भूतकाल की तरह गवा देते हैं। भूतकाल को सदैव ही उपयोग में रखने वाला व्यक्ति भूत की तरह स्वयं भी परेशान रहता है और दूसरों को परेशान करता है। दूसरी ओर कुछ लोग भविष्य में भावी कल्पनाओं में जीते हैं या शेख चिल्ली जैसे सपने देखते रहते हैं। भावी सोम शर्मा के पिता की तरह अपनी झोंपड़ी में जल कर स्वयं नष्ट हो जाता है। भविष्य अजन्मा है इसीलिये इस पर विश्वास नहीं, भूत मर चुका इसीलिये उसे किसी भी औषधि से जीवित नहीं किया जा सकता। कभी भी अजन्मा हमारी सहायता नहीं करेगा, कभी भी मरा हुआ सहायता के लिए नहीं आयेगा। हमारी सहायता वही कर सकता है जो सामने खड़ा है जो सामने खड़ा है उसे वर्तमान कहते हैं वही अपनी सहायता करने में समर्थ है **वर्तमान में जीने वाला ही वर्धमान बनता है।** यह कहना उचित ही है कल पे सवाल है (चाहे कल बीता हुआ हो या आने वाला) आज ही निहाल है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

समझो दृष्टिकोण

नजर की शल्य चिकित्सा (Operation) संभव है नजरिये की नहीं। रोगों का उपचार संभव है रोगी का नहीं, घड़ी की मरम्मत संभव है समय की नहीं, भोजन में सुधार संभव है भूख में नहीं, पेय में श्रेष्ठता आ सकती है प्यास में नहीं, सोने के साधन अच्छे हो सकते हैं नींद नहीं, स्त्रियाँ प्राप्त की जा सकती हैं प्यार नहीं, मकान खरीद सकते हो घर नहीं, धर्मात्मा अनेक हो सकते हैं धर्म नहीं, सिद्धात्मा अनेक हो सकते हैं सिद्धत्व नहीं, मार्ग में सुधार सम्भव है मंजिल में नहीं, रूप को बदला जा सकता है स्वरूप को नहीं, रंग को बदला जा सकता है रंगहीन को नहीं, ज्ञान के साधन अनेक हो सकते हैं ज्ञान नहीं। अरे भले आदमी तू चश्मा लगा कर दृष्टि बदल सकता है दृष्टिकोण नहीं। आत्मा का कल्याण दृष्टि बढ़ाने या बदलने से न होगा दृष्टिकोण बदलना जरूरी है। कोई दृष्टिकोण गलत नहीं है किन्तु कोई भी दृष्टिकोण पूर्ण सत्य भी नहीं है। अपने दृष्टिकोण को समझाने का असफल प्रयास न करो दूसरों का दृष्टिकोण समझने की चेष्टा करो सम्भव है तब लोग तुम्हारा दृष्टिकोण समझेंगे।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुन्दी

सुनो आत्मा की आवाज

प्रत्येक प्राणी में एक जीवन्त आत्मा पायी जाती है वह हर प्राणी को बुरे कार्य करने से रोकती है। बहुत कम प्राणी होते हैं जो आत्मा की उस आवाज को सुनते हैं। संसार में अधिकांश प्राणी इन्द्रियों की बात को सुनते हैं और कुछ मन की बात को। इन्द्रियों की बात सुनने वाला सदा गुलाम है मन की बात सुनने वाला दूसरों के निर्देश का पालन करता है। एक वही स्वतन्त्र है जो आत्मा की सुनता है और करने की चेष्टा करता है। नक्कार खाने में तूती की आवाज को सुने कौन? जहाँ इन्द्रियाँ निरन्तर खटपट मचाती हों मन ऊँची आवाज में तीव्र गति से दहाड़ रहा हो उस परिवेश में बेचारे भोले हंस (आत्मा) की कौन सुने। अपनी आत्मा से हमेशा पूछते रहो कि अब क्या करना चाहिये। जिस कार्य की आत्मा प्रेरणा दे उस कार्य को कभी मत छोड़िये। आत्मा की आवाज कभी मिथ्या नहीं होती। आत्मा की आवाज का आभास जिन्हें हो जाता है वे न किसी की पराधीनता स्वीकार करते हैं और न ही कभी दुःखी होते हैं अतः आत्मा की आवाज को सुनने का मार्ग ही कल्याण का मार्ग हो सकता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुन्दी

दिन में ऐसा न कर

जो व्यक्ति बचपन में अच्छे कार्य करते हैं उनकी जवानी

सुखद व्यतीत होती है जिन्होंने जवानी में अच्छे कार्य किये हैं उनकी प्रौढ़ अवस्था अच्छी व्यतीत होती है और जो प्रौढ़ अवस्था में अच्छे कार्य करते हैं उनकी वृद्ध अवस्था अच्छी होती है जो वृद्ध अवस्था में अच्छे विचार रखते हैं उनकी समाधि (अच्छी मृत्यु) होती है उन्हें सुगति की प्राप्ति होती है। बीज अच्छा होता है तो वृक्ष अच्छा होता है वृक्ष अच्छा होता है तो पुष्प, फल भी अच्छे होते हैं, फल अच्छे होते हैं तो बीज भी अच्छे पैदा होते हैं। जो व्यक्ति दिन में नेक काम करते हैं वे रात्रि में चैन की नींद सोते हैं। जो रात में नेक कार्य करते हैं या चैन की नींद सोते हैं वे दिन भर प्रसन्न रहते हैं। अरे ! प्रभु के बन्दे दिन में कोई ऐसा काम न कर जिससे रात में सो न सके और रात के अन्धेरे में कोई ऐसा काम न कर कि दिन के उजाले में चेहरा भी न दिखा सके ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

ये भी गुजर जायेंगे

धैर्य भी मानव की एक ऐसी निधि है जो सभी गुणों को

संभालकर रखती है और अन्ततः हर कार्य में सफलता भी दिलाती है। जो धैर्य से रहित होते हैं वे उतावले महानुभाव बावले कहलाते हैं वे अपना काम स्वयं अपने ही हाथों से बिगाड़ लेते हैं, न कभी दूसरों की प्रतीक्षा करते हैं न कभी समय पर पहुँचते हैं। जल्दबाजी में ऐसी हड़बड़ मचाते हैं कि समय पर पहुँचने की बजाय लेट हो जाते हैं। धैर्यशाली व्यक्ति जीवन में आई प्रतिकूलताओं की परवाह नहीं करते, वे जानते हैं अनुकूलता हो या प्रतिकूलता यह तो जीवन रूपी जजमान का अतिथि है, अतिथि कोई शाश्वत ठहरता नहीं जो चिरकाल तक ठहर जाता है वह अतिथि नहीं वासी कहलाता है। हिम्मत वाले व्यक्ति हमेशा कहते हुये देखे जाते हैं “अरे चिन्ता मत करो वे दिन नहीं रहे तो ये भी गुजर जायेंगे, जो आज अपनी हँसी उड़ाते हैं उनके भी चेहरे उतर जायेंगे” । इसीलिये हम तो हमेशा यही कहते हैं-

चिन्ता न करो तुम दुःखों की ये यूँ ही कटते जाते हैं,
फूल सदा काँटों में खिलते सेजों पर मुरझाते हैं।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

वह धरा कहाँ है

संसार में कोई पूर्ण नहीं होता, प्रकृति का नियम है वह प्रत्येक

व्यक्तित्व में कोई न कोई कमी जरूर छोड़ती है। कोई तन से, मन से, वचन से दुःखी है तो कोई धन से दुःखी है। किसी के पास पर्याप्त धन है तो तन से दुःखी है किसी का तन निरोगी है तो मन से दुःखी है तो अन्य कोई स्वजन व परिजन से दुःखी है। कोई समय पर उचित साधन के अभाव में दुःखी है तो कोई समय की गतिशीलता से दुःखी है। कोई दिन से तो कोई रात से दुःखी है, कोई पुत्र के लिये दुःखी है तो कोई पुत्र से दुःखी है, कोई स्त्री से तो कोई स्त्री के लिये दुःखी है, कोई पद प्रतिष्ठा पैसे के लिये दुःखी है तो कोई पद, प्रतिष्ठा, पैसे से दुःखी है। कोई एकाकी पन से दुःखी है तो कोई भीड़ से दुःखी है, कोई भीड़ के लिये दुःखी है तो कोई स्वयं के भीड़ में निवास के लिये दुःखी है। जीवन का आनंद तो तभी है जब उसमें कोई न कोई कमी दिखाई दे। प्रकृति ने चाहे कितना बड़ा शरीर दिया है किन्तु किसी के हाथ में पाँचो उँगली बराबर नहीं दी इसीलिये इस बात को हम कई बार कहते हैं-

**बेबस, उत्पीडन, लाचारी किसके साथ नहीं होती
बोली ऐसी धरा कहाँ है जहाँ पर रात नहीं होती।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

काबिल बनो

घी असली दूध से ही प्राप्त किया जा सकता है। आक के दूध या

दूध जैसे खड़िया के घोल से नहीं। तेल सरसों, तिल, मूँगफली, बादाम आदि तिलहन से ही प्राप्त किया जा सकता है तदाकार- उस आकार रूप और वर्ण रूप कंकर पत्थरों से नहीं। गन्ने का रस गन्ने से ही मिलेगा ज्वार, बाजरा व अरण्डी के पेड़ों से नहीं, अंगूर का रस अंगूर में मिलेगा उस आकार की निम्बोरी में नहीं। मानवीय गुण जीवन्त मानवों में मिलेंगे मानवाकार पुतलों में नहीं। जल जलाशयों, कूप, नदी, सरोवर में मिलेगा जलाशयादि के चित्रों में नहीं। इत्र असली पुष्पों से निकाला जा सकता है कागज के फूलों से नहीं, वृक्ष खेत में उगाये जा सकते हैं, खेतों की तस्वीरों में नहीं। इसी तरह वही इन्सान अपनी मंजिल को प्राप्त करता है जो निष्ठा के साथ मंजिल को प्राप्त करने की काबीलियत अपने अन्दर पैदा कर ले, बिना काबीलियत के मंजिल प्राप्त नहीं होती, बिना रत्नत्रय के मोक्षमार्ग फल संभव नहीं है उसी प्रकार योग्यता के बिना योग्य फल भी असंभव है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

करो खुश होकर के

एक कहावत आपने सुनी होगी लोग कहते हैं- बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख। हाँ किन्तु तब जब माँगने वाला अपनी पात्रता से रहित है। बिना माँगने वाला जिस चीज की पात्रता रखता है देर सवेर उसे वस्तु मिल ही जाती है। प्रकृति कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करती जिसकी जैसी योग्यता होती है उसे वैसी वस्तु उपलब्ध करा देती है। जो रात के अन्धकार से नहीं घबराते उन्हें दिन का प्रकाश प्राप्त हो ही जाता है और जो दिन के प्रकाश का दुरुपयोग करते हैं तो उन्हें रात का अन्धकार झेलना ही पड़ता है। जीवन में कार्य तो सभी करते हैं एक रो -रो कर करता है दूसरा हँस -हँस कर। एक दुःखी मन से करता है एक खुश मन से। एक स्व पर हित की भावना से करता है दूसरा अहित की भावना से, काम चाहे छोटा हो या बड़ा जब उन्हें तरीके से किया जाता है तो दुनियाँ तारीफ करती है। बड़ा काम भी खोटी विधि या बुरे तरीके से किया जाता है तो वह भी दुःख देने वाला हो जाता है और छोटा सा कार्य अच्छे तरीके से किया जाता है तो आनंद का कारण बन जाता है जैसे गलत तरीके से शक्कर की चाशनी बनाने वाला व्यक्ति शक्कर जला देता है और वह मीठी से कड़वी हो जाती है। मेरा तो बस इतना ही कहना है कि आप खुशी का पात्र बनने के लिये कार्य कर रहे हैं। संक्लेशता से न करें, हर कार्य को खुश होकर करें खुशी आपको अवश्य मिलेगी।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कैसा मित्र?

जब कोई व्यक्ति अपने कार्य में सफल हो जाता है तो उसके मित्रों की संख्या बढ़ती जाती है दुनियाँ के लोग उसे पहचानने लगते हैं सब लोग उसका परिचय पत्र, फोन नं. माँगना चाहते हैं, कोई उसकी प्रशंसा करता है तो कोई सम्मान, कोई हमारा परिचय, व्यक्तित्व, विशेषतायें दुनियाँ के कोने -कोने तक पहुँचाता है। हम जिन्हें नहीं जानते वे भी हमें श्रद्धा से पूजने लगते हैं। दूसरी ओर जो व्यक्ति जीवन में असफल होते हैं बार -बार असफल होते हैं, असफलता उनका पीछा ही नहीं छोड़ती है तब उन्हें दुनियाँ से परिचय होने लगता है अपनों की यथार्थता का बोध हो जाता है पराया तो पराया था ही किन्तु अपने पराये से भी दूर दिखायी देते हैं। हो सकता है पराये में से कोई साथ देने आ जाये किन्तु प्रतिकूलता में जिनको हम अपना मानते थे वे कभी साथ नहीं देते हैं अपितु प्रतिकूलता पैदा करने में निमित्त कारण बनते हैं। **जीवन में एक बात सदैव याद रखो सच्चा मित्र उसे ही कहो जिसका व्यवहार, बरताव, प्रकृति हमारे समय के बदलने पर भी नहीं बदलती है।** ऐसा मित्र जिसे मिल जाये उसे फिर पुद्गलों का ढेर (भौतिक सम्पत्ति) जोड़ने की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह सच्चा मित्र बलशाली हाथी की तरह से आपको परेशानियों के दल-दल से निकालकर सफलता के शिखर तक पहुँचाने में पंगु की वैसाखी की तरह से सहायक हो जाता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कैसे बनें परीक्षक

मैं महान व्यक्ति उन्हें नहीं कहता जिन्होंने कभी असफलता का

मुँह नहीं देखा अपितु महान व्यक्ति तो वे कहलाते हैं जो असफलताओं की गरदिशों में से निकलकर सफलता के शिखर पर पहुँच जाते हैं। सहज में हुये सूर्य के उदय का प्रकाश और प्रताप इतना परेशान नहीं करता जितनी बदली की छाँव। जिस व्यक्ति ने जितनी ज्यादा सीढ़ी चढ़ी हों वह उतनी ऊँचाई पर पहुँच जाता है। ऊँची - ऊँची सीढ़ी चढ़ने वाला ज्यादा सीढ़ी नहीं चढ़ पाता जल्दी थक जाता है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में जितनी परीक्षाएँ दी होंगी वह उतना ही अनुभव प्राप्त करता है व सफल होने में उतने ज्यादा प्रमाण पत्रों को भी। परीक्षा परीक्षा के लिये सुखद नहीं होती तत्काल में तो घबराहट, बेचैनी, आकुलता, चिन्ता पैदा करने वाली होती है। किन्तु उसके बाद प्रत्येक परीक्षार्थी को सन्तोष का अनुभव होता है। परीक्षा से घबराने वाला परीक्षार्थी कभी परीक्षक नहीं बन सकता। पिटने से बचने वाली मेहंदी कभी रंग नहीं दिखा सकती, तराशने, काँट, छॉट की चोट को सहने में असमर्थ हीरा चमक नहीं दे सकता, छैनी हथोड़ा की चोट से डरने वाला पत्थर मूर्ति नहीं बन सकता जीवन। मैं घबराओ मत परीक्षा देने के लिये तत्पर रहो क्या आप पूजन की पंक्ति भूल गये, जिन्हे आप नित्य पढ़ते हैं-

**जिसने भी शुद्ध मनोबल से ये कठिन परीषह झेली हैं
सब ऋदि सिद्धियाँ नत होकर उनके चरणों में खोली हैं।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

बचाना ही बुद्धिमानी

संसार में ऐसी कई वस्तुएँ हैं जिसे हम बचा सकते हैं बचाकर के

उसकी और खुद की सुरक्षा कर सकते हैं। जिस चीज को हम बना नहीं सकते उसके बचा लेने में ही बुद्धिमत्ता है। किसी पक्षी के बच्चे को मरने से बचाया जा सकता है, किसी पेड़ को कटने से बचाया जा सकता है, किसी घायल जानवर को मौत के मुँह से बचाया जा सकता है, जल को व्यर्थ बहने से बचाया जा सकता है, हवा व धूप को बचाया जा सकता है, अपने देश की भूमि को बचाया जा सकता है, किसी भी नारी की इज्जत को बचाया जा सकता है अतः इन्हें बचाने की भरपूर कोशिश करो क्योंकि इन्हें बनाया नहीं जा सकता।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

महानता का मार्ग

महापुरुष वे होते हैं जो महानता के मार्ग पर चलते हैं। महानता का

मार्ग भले ही कितना दुर्गम क्यों न हो किन्तु वे अधमता के मार्ग को नहीं चुनते कई बार उन्हें रास्ता बनाना भी पड़ता है किन्तु वे उसकी परवाह नहीं करते। अधम पुरुषों को अधमता का मार्ग ही पसन्द आता है महान पुरुषों को महानता का। सामान्य पुरुष के सामने तीन विकल्प हैं १. सामान्य २. अधमता अथवा महानता का रास्ता चुनें। यद्यपि बाधायेँ तीनों मार्गों में आना सम्भव है अधमता का मार्ग प्रारम्भ में सुखद अन्त में अति कष्टदायी होता है। सामान्य मार्ग सुख - दुःख से मिश्रित ही होता है। महानता का मार्ग प्रारम्भ में कष्टप्रद ही प्रस्तुत होता है किन्तु अन्त में अनन्त सुख देने वाला होता है। सामान्य व्यक्ति महानता के मार्ग को जब दूर से देखता है तब उसे आभास होता है कि रास्ता बन्द है किन्तु साहस, लग्न, निष्ठा और समर्पण से किसी भी प्रतिकूलता की परवाह किए बिना जब आगे बढ़ता है तो करीब पहुँचते ही रास्ता खुला दिखाई देता है क्योंकि महानता के मार्ग बहुत उतार चढ़ाव से युक्त एवं टेढ़े मेढ़े भी दिखाई देते हैं। एक मोड़ के बाद दूसरे मोड़ पर रास्ता बंद दिखाई देता है उसको पार करें तो अगला मोड़ बंद लगता है। यद्यपि रास्ता बन्द है नहीं किन्तु दिखता है, जिस तरह खड़े पहाड़ के रास्ते। अतः चोटी तक पहुँचने के लिए निराबाध रूप से निष्ठा व आत्म विश्वास के साथ गतिमान रहें, मंजिल आपकी प्रतीक्षा कर रही है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

बादलों में सूर्य

अंगारों पर चाहे कितनी भी राख जम जाये अन्दर में छोटी सी भी

चिंगारी जीवित है तो वह हवा का निमित्त पाकर बहुत बड़े कूड़े के ढेर को स्वाहा कर सकती है। इसी तरह जो व्यक्ति अपने अरमान, सपने, गंतव्य और प्राप्तव्य को सदैव याद रखते हैं, प्रतिकूलता उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकती। संभव है प्रतिकूल परिस्थिति की गर्दिश में वह अरमान धूमिल होते दिखाई दें किन्तु अनुकूलता की हवा चलते ही वे पुनः चमक उठेंगे। यदि सपने मर गये तो अनुकूलता की हवा से उन्हें पैदा नहीं किया जा सकता। यदि आकाश में उदीयमान सूर्य है तब कितने भी घने बादल आ जायें, अनुकूल हवा के चलते ही मेघ समूह स्वतःही तितर- बितर हो जायेगा। बादलों से डरकर जो सूर्य अस्त हो जाता है उस सूर्य के लिये अनुकूल पवन क्या कर सकती है। अनुकूल पवन से उदीयमान सूर्य को प्रकट कर सकते हैं, अस्त सूर्य को नहीं। जिस प्रकार देव, शास्त्र, गुरु के निमित्त से आसन्न भव्य तो अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकता है किन्तु अभव्य नहीं।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

नयी राह का नया अनुभव

जब कोई भी राहगीर नई राह पर चलता है तब उसका मार्ग की नवीनतम अनुकूलता व प्रतिकूलता से परिचय भी होता है। जो खड़ा रहता है वह उसी वातावरण को सहने के लिये मजबूर हो जाता है। संभव है चलने वाले व्यक्ति को राह में कभी फूल मिलें कभी शूल, कभी छाँव मिले कभी धूप, कभी मित्र मिलें कभी शत्रु, कभी पहाड़ी मिले कभी गर्त, कभी राजपथ कभी पगडन्डी, कभी मार्ग काँटों से भरा हुआ तो कभी फिसलन से भरा हुआ। कण्टकाकीर्ण मार्ग में काँटों से पैरों का लहुलुहान होना भी संभव है और फिसलन भरे मार्ग पर फिसलना भी संभव है। कभी पैर पत्थरों से ठोकर भी खा सकते हैं कभी फूलों से सुहासित। कभी ऐसा भी हो सकता है धूल से धूसरित और कीचड़ से गन्दे भी हो जायें तो कभी जल में चलने से निर्मल भी हो सकते हैं। गर जीवन में कुछ नया पाना है तो नया रास्ता चुनना ही पड़ेगा और नये-नये जोखिमों को उठाने के लिये भी तैयार रहना पड़ेगा।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सर्व्वत्थ सुंदरो लोए

प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग प्रकार की क्षमता होती है एक ही विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी अलग-अलग प्रकार की सफलता प्राप्त करते हैं और असफल भी अलग-अलग प्रकार की असफलता प्राप्त करते हैं। एक विद्यार्थी संस्कृत में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करता है, दूसरा प्राकृत में, तीसरा तकनीकी में तो चौथा व्याकरण में, पाँचवा न्याय में तो छटवाँ अध्यात्म में, सातवाँ रसायन में तो आठवाँ योग विज्ञान में नौवाँ सिद्धान्त में तो दसवाँ इतिहास में, ग्यारवाँ भूगोल में तो बारहवाँ आयुर्वेद में तो तेरहवाँ यंत्र में तो चौदहवा तंत्र में अगला मंत्र साधना तो अगला अस्त्र-शस्त्र कला में प्रत्येक व्यक्तियों में सब कलायें शत प्रतिशत नहीं होती। शरीर का छायाचित्र खींचने वाली मशीन से शरीर के अन्दर की हड्डियों का छायाचित्र नहीं लिया जा सकता। शरीर के अन्दर वाली हड्डियों का चित्र लेने वाली मशीन से शरीर का चित्र नहीं आता। भोजन में भले ही सब व्यंजन अच्छे हों फिर भी प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी रुचि अनुसार अलग-अलग व्यंजन पसंद आते हैं। इसी तरह प्रत्येक वस्तु में अच्छाई तो है किन्तु हर व्यक्ति हर अच्छाई को नहीं देख सकता इसीलिये आचार्य भगवन् कुन्दकुन्द स्वामी ने समयसार में लिखा है सर्व्वत्थ सुंदरो लोए।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कैसे जानें सब कुछ

समाचार पत्रों के माध्यम से मनुष्य बाहर के समाचारों को पढ़कर

जान लेता है चलचित्रों के माध्यम से उनका दृश्य देखकर जान लेता है। ध्वनि प्रसारक दूरसंचार यंत्रों के माध्यम से उन समाचारों को सुन कर जान लेता है। लोकालोक के बारे में पृथ्वी और ग्रहों के बारे में कर्म और कार्य के बारे में, बन्ध और मोक्ष के बारे में महात्मा और परमात्मा के बारे में, पुण्य और पाप के बारे में, आस्रव और संवर के बारे में स्वाध्याय करके बहुत कुछ जाना जा सकता है। अनेक पुस्तक, साहित्य, ग्रन्थ, पुराण स्मृति व धर्म ग्रन्थों के माध्यम से जानने के लिये बहुत कुछ है किन्तु आत्मा को जानने के लिये स्वाध्याय परमावश्यक है। स्वाध्याय का अर्थ है आत्मा को पढ़ना जिस प्रकार पुस्तक पढ़ने के लिये वर्णमाला, मात्रा, शब्द, अर्थ, वाक्यों का ज्ञान होता है उसी प्रकार चेतना को पढ़ने के लिये धार्मिक शब्दों को आत्मा के गुणों को, कर्तव्यों को-विभाव स्वभाव को लक्षण व विशेषताओं को जानना अति आवश्यक है। धर्म की वर्णमाला एवं संयम साधना की मात्रायें और तप के शब्दार्थ को जानकर उसका पुनः अभ्यास आवश्यक है। यह ध्यान से ही संभव है जिसने आत्मा को जान लिया उसने सब कुछ जान लिया और जिसने आत्मा को नहीं जाना उसने बहुत कुछ जान कर भी कुछ नहीं जाना ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

अपराजित बनो

संसार में एक से एक सुभट शूरवीर पराक्रमी योद्धा देखे जाते हैं जो

एक-एक योद्धा कई योद्धाओं को परास्त करने में समर्थ होता है। शतभट, सहस्रभट, लक्षभट, कोटिभट इत्यादि शब्द भी लोक में प्रसिद्ध हैं। एक व्यक्ति अपने जीवन में अनेक युद्धों में आश्चर्य कारक सफलता प्राप्त कर विजयलक्ष्मी को वरता है तो दूसरा व्यक्ति आश्चर्यकारक कार्य करके दूसरों को चमत्कृत कर देता है। एक अदम्य साहसी पुरुष अनेक प्रतिकूलताओं का मुकाबला करता हुआ अपने गन्तव्य को हस्तगत कर लेता है दूसरा अपनों की प्रतिकूलता के कारण प्राप्त विजय को भी हार में बदल लेता है। अपना एक विरोधी हो जाये तो इतनी बुरी हार करवा सकता है कि उससे बचने के लिये सौ मित्र भी शत्रु बन जायें तो लाभ नहीं होगा । पराजय दूसरों से कम अपनों से ज्यादा होती है जिसके अपने टूट गये या रूठ गये या अपनों के हृदय टूट गये, फिर वह ऊँचे आसन पर महलों में बैठा हुआ भी उस फकीर से बदतर है जो जंगल में अपने साथियों के साथ घास के सूखे तिनके बिछाये बैठा है। अपनों का अपने पास होना ही सबसे बड़ी सफलता है। जिसके होंसले टूट गये हों अरमानों के चिराग बुझ गये हों स्वप्न मर गये हों जीवन की आशा छोड़ चुका हो ऐसा व्यक्ति जीतकर भी पराजित ही है अर्थात् हारा हुआ है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

प्रशंसा के प्यासे कान

कुछ लोगों की आदत होती है किसी कार्य को करने का मन में विचार आते ही ढोल पीटना शुरू कर देते हैं, कुछ व्यक्ति अपनी योजनाओं को दूसरों के सामने रख देते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जो कार्य से पूर्व ही दूसरों से सहायता माँगना शुरू कर देते हैं किन्तु संसार में ऐसे व्यक्ति भी हैं जो अपने काम को अत्यन्त खामोशी के साथ करते हैं और कार्य करते हुये भी लोग न जान पायें कि वह क्या कर रहा है। केवल विशेष व्यक्ति ही जान पायेंगे कि वह क्या कर रहा है। महापुरुष वे होते हैं जिनके कार्यों के फल ही समझ आते हैं कार्य नहीं। **यदि तुम्हें भी अपने जीवन में कोई विशेष सफलता प्राप्त करना है तो कार्य इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचाने लगे** क्योंकि जिनकी कार्यशैली शोर मचाती है उनकी सफलता संदिग्ध होती है। अपनी पाचन शक्ति को बढ़ाओ केवल पेट की नहीं मस्तिष्क की भी। अपनी प्रशंसा के प्यासे कानों को अपनी निंदा के गर्म जल से संतुष्ट करो जिससे उनकी प्यास अच्छी तरह बुझ जाये व प्रशंसा के शीतल जल की कामना न करें।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

अपनी श्रेणी चुनें

संसार में कई प्रकार के लोग होते हैं एक वे जो खुद निंदनीय कार्य करते हैं और दूसरों की निंदा करते हैं। दूसरे वे जो खुद तो निंदनीय कार्य करते हैं और दूसरों की निंदा में मौन हो जाते हैं। एक वे जो खुद तो निंदनीय कार्य करते हैं और दूसरों की प्रशंसा करते हैं। कुछ व्यक्ति प्रशंसनीय कार्य करते हैं किन्तु दूसरों की प्रशंसा, निन्दा में मौन हो जाते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो स्वयं प्रशंसनीय कार्य करते हैं और दूसरों की प्रशंसा भी करते हैं। कुछ व्यक्ति निंदनीय कार्य करके अपने ही घर में अपनी निंदा करते हैं या अपनी प्रशंसा करते हैं तो अन्य व्यक्ति प्रशंसनीय कार्य करके अपने घर में अपनी निंदा या प्रशंसा करते हैं उन व्यक्तियों को कौन समझाये जो दूसरों से ईर्ष्या करते हुये उनकी निन्दा का कार्य करते हैं। अपने घर में तो गुण प्राप्ति के लिये गुणाराधना करना चाहिये किन्तु जो दूसरों की निन्दा करके पाप बन्ध कर रहे हैं उनसे बड़ा मूर्ख और कौन होगा? हाँ आप भी निर्णय कर लें आप कौन सी श्रेणी में आते हैं?

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

छोड़ो बुरी आदतें

व्यक्ति दूसरों से नहीं अपनी आदतों से परेशान होता है जिसे

जैसी आदत पड़ जाती है उसे वही अच्छी लगने लगती है। आदत को भी मनीषी विद्वान् दूसरा स्वभाव प्रकृति ही कहते हैं। प्रकृति का बदलना संभव है आदतों का बदलना मुश्किल किन्तु असंभव नहीं। किसी को सहने की आदत होती है तो किसी को कहने की। किसी को दहने की आदत होती है तो किसी को रहने की। किसी को आने की आदत है तो किसी को जाने की। किसी को शिकायत करने की आदत होती है तो किसी को सुनने की। किसी को दान लेने की आदत होती है तो किसी को दान देने की। किसी को सुनाने की आदत है तो किसी को सुनने की। किसी को छुपाने की आदत है तो किसी को दिखाने की। व्यक्ति दूसरों से नहीं अपनी आदतों से परेशान होता है अपनी आदत के कारण से नीचा देखना पड़ता है पश्चाताप भी करना पड़ता है। बुद्धिमान वह होता है जो बुरी आदतों को छोड़ दे। शिकायत करने वाले धूप की भी शिकायत करेंगे और बादलों की भी। दूसरी ओर वे व्यक्ति हैं जो धूप में धूप का आनन्द लेते हैं बारिश में बारिश का आनन्द लेते हैं।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

ऐसा हो व्यक्तित्व..?

आज का मानव सुनना कम चाहता है सुनाना ज्यादा चाहता है,

संसार में सुनने वाले कम सुनाने वाले ज्यादा हैं। इसका भी कारण यह है कि सुनने वाले तो मात्र पंचेन्द्रिय जीव हैं और सुनाने वाले सभी त्रस जीव (दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक) बिना सुने कोई अपना कल्याण नहीं कर सकता। जो सबकी सुनकर भी अपने में रहता है वही आत्म कल्याण का पात्र होता है। सुनने का आशय है सहनशील बनना और समता को अंतरंग में धरना। दूसरों को सुनाने के लिए अपनी आवाज बुलंद करने की या ऊँची आवाज में जोर से चिल्ला - चिल्लाकर बोलने की कतई आवश्यकता नहीं है। बस आप अपना व्यक्तित्व ऐसा बना लीजिए कि दूसरे आपको सुनने के लिए प्यासे चातक की तरह लालायित रहें, आप धीरे भी बोलें तो और भी ध्यान लगाकर सुनें। बाढ़ का पानी उतना लाभदायक नहीं होता जितना सतत प्रवाही समधारा का।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

कैसा साथ?

जिस प्रकार धागे से रहित सुई, पते से रहित पत्र, मंजिल से

रहित राहगीर, समुद्र से रहित नदी, दिग्दर्शक यंत्र से रहित वाहन, लक्ष्य से रहित मानव, वैराग्य से रहित संयमी, तत्त्वज्ञान से रहित तपस्वी, आत्मध्यान से रहित योगी भटक जाते हैं उसी प्रकार संसार की भीड़ में संसारी प्राणी भटक रहे हैं। आत्मा का कल्याण करने के लिए उन्हें सच्चे देव, सच्चे शास्त्र एवं सच्चे गुरु का आलम्बन चाहिए तभी आत्म कल्याण संभव है। बालक मेले में यदि माता - पिता की अंगुली पकड़े रहेगा तो कभी गुमेगा नहीं, भटकेगा नहीं, रोयेगा नहीं अपितु पूर्ण आनंद का अनुभव करेगा, मंजिल तक पहुँचेगा। माता - पिता की अंगुली छूटते ही भटक जायेगा, रोयेगा, दुःख पायेगा इसलिए हे प्रभु परमात्मा! हमें तेरा साथ हर भव में चाहिए। किसी ने ठीक कहा है :-

इस तरह जिन्दगी में मुझे प्रभु तेरा साथ चाहिए।
जिस तरह बच्चे को भीड़ में पिता का हाथ चाहिए ॥

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

क्या ऐसे कर सकते हैं धर्म

किसी ने पूछा - धर्म कैसे करें? हमारे पास समय नहीं है, हमारे

ही दैनिक कार्यों से, अपनी जिम्मेदारियों से, कर्तव्यों का पालन करने से....। हमने उन्हें कहा कि जो कार्य आप कर रहे हैं उसे पूर्ण ईमानदारी से करें, दयाभाव से युक्त होकर करें, प्रभु की भक्ति की तरह आनंद के साथ करें तो आपकी जिम्मेदारियाँ व कर्तव्य पालन भी धर्म में परिगणित हो सकते हैं। किसी को दो मीठे बोल बोलना, हँसाना, उसे तनावमुक्त कर मुस्कुराहट देना, उसके आत्मीक आनंद में कारण बनना भी रक्तदान से ज्यादा पुण्य दे सकता है। अच्छे कार्य करने वालों की पीठ थपथपा देना भी सम्यक् श्रमदान का पुण्य दे सकता है। अपनी थाली में जूठा न छोड़ना, अन्न का दुरुपयोग न करना भी अन्नदान का फल दे सकता है। अपने शब्दों का विचारों का दुरुपयोग न करना भी ज्ञानदान हो सकता है, अपनी किसी भी साधन सामग्री का दुरुपयोग नहीं करना ही सम्यक् साधना हो सकती है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

ठोकरों से बचो

महान व्यक्ति वे नहीं कहलाते जो बड़े - बड़े कार्य करें अपितु

महान तो वे होते हैं जो छोटे कार्यों को भी अत्यन्त कुशलतापूर्वक उत्तम रीति से करते हैं। किसी भी कार्य को कुशलता से करने वाला सफल व्यक्ति ही पुरस्कार के योग्य होता है। स्नातकोत्तर की परीक्षा में अनुत्तीर्ण को पुरस्कार नहीं दिया जाता जबकि प्रथम - द्वितीय कक्षा में भी सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करे तो पुरस्कार अवश्य मिलेगा। व्यक्तित्व का निर्माण बड़ी - बड़ी गलतियों से बचने से नहीं अपितु छोटी - छोटी बुराई और गलतियों से बचने से ही संभव है। जिस वृक्ष को प्रारम्भ से ही सीधा कर दिया है वह भविष्य में टेड़ा नहीं होगा किंतु प्रारम्भ में टेड़ा होने पर भविष्य में सीधा न हो सकेगा। मिट्टी का कलश छोटी कंकड़ी के मिट्टी में रह जाने पर भग्न या सच्छिद्र हो जाता है बड़े - बड़े पत्थरों से नहीं। जीवन में एक बात सदैव ध्यान रखो **व्यक्ति ठोकर छोटे - छोटे पत्थरों से खाता है पहाड़ों से नहीं, व्यक्ति अपनी छोटी भूल से ही पराजित होता है उसे देखो, जानो और दूर करो।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

“खुशी कहाँ और कब हो”

अज अधिकांश मानव दुःखी होते हुए भी दूसरों को दिखाने के लिए

मुस्कुराते हैं। वे दूसरों को यह दिखाना चाहते हैं कि वे सबसे ज्यादा सुखी हैं, उनका यह दिखावटी सुख या खुशी वैसे ही है जैसे खराब मिठाई पर अच्छा वर्क या गोबर भरे कलश में ऊपर से घी भर दिया हो या गिलेट पर चाँदी या पीतल पर सोने की पॉलिश कर दी हो। इससे तुम्हारे अंदर का दुःख मिट नहीं जाता तुम दूसरों को नहीं खुद को ही धोखा दे रहे हो। यह छल तुम्हारे हृदय को छलनी करने वाला है। खुशी को अपने अंतरंग से प्रकट करो जिस प्रकार कूप में पानी का स्रोत अंदर से ही होता है, उसी प्रकार खुशी अन्दर से हो। खुशी बाहर के मेकअप व ड्रेस की तरह क्षणिक न हो अपितु देह में विद्यमान चमड़ी की तरह हो या प्राणों की भाँति निरन्तर हो। किसी ने ठीक ही कहा है **“खुशी हमारी तकदीर में हो, तस्वीर में तो हर कोई मुस्कुराता है।”** तकदीर की खुशी के लिए पुण्य कार्य में संलग्न रहो।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

तब और अब

कितना प्यारा होता है बचपन ना कोई चिन्ता न कोई फिकर

किसी से द्वेष नहीं, घृणा नहीं, बैर नहीं, आसक्ति नहीं सब कुछ सहज। माँ जितना ध्यान रखती थी बचपन में उतना ध्यान हम अपना पचपन में भी कहाँ रख पाते हैं, सब मिलकर भी मेरा उतना ध्यान नहीं रख पाते जितना ध्यान अकेली माँ हम सब भाई - बहनों का रख लेती थी। रूठ जाने पर मना लेती थी, पुचकार कर भोजन कराती, सब जिद्द पूरी करती। हमारी आवश्यकताओं को ही नहीं बल्कि हमारी ख्वाहिशों को भी उसने पूरा किया। चाहे वह स्वयं अभाव की जिन्दगी जीती रही किन्तु आज उस माँ के बिना सारा जीवन सुनसान व श्मशान जैसा भयानक हो गया है। बचपन में हम खेलते - खेलते कहीं भी सो जाते थे किन्तु जब हमारी नींद खुलती तो हम अपने आपको बिस्तर पर पाते थे किन्तु आज हम भूल से अच्छे बिस्तर पर सो जायें तो बेटा उतार कर जमीन पर ही सुला देता है। सोचो तब और अब में....

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

जिन्दगी के रूप

अकाश में दिखाई देने वाले इन्द्रधनुष की तरह जिन्दगी के अनेक

रूप होते हैं। व्यवस्थित जिन्दगी स्व - पर सुखद और अव्यवस्थित जिन्दगी सबको दुःख देने वाली होती है। जिन शब्दों का उच्चारण एक लयबद्ध तरीके से सुरताल का ध्यान रखकर किया जाता है तो संगीत बन जाता है अन्यथा अनावश्यक शोरगुल। पत्थरों को व्यवस्थित तराश दें तो वह भगवान की मूर्ति बन जाती है अन्यथा सबके पैरों को कष्ट देने वाले व स्वयं ठोकर खाने वाले पत्थर ही रहते हैं। रंगों को व्यवस्थित तरीके से किसी चित्रकला को पट्ट पर भरो तो सुन्दर चित्र बन जाता है अन्यथा भयावना बदरूप चित्र। ईंटों को व्यवस्थित कर लगाने से महल भी बन सकता है अन्यथा वह मार्ग की अवरोधक होगी इसी तरह अपने जीवन को भी व्यवस्थित करना चाहिए। किसी ने ठीक ही कहा है :-

वैसे तो यह जिन्दगी बहुत खूबसूरत है
फिर भी इसे जरा संभालने की जरूरत है।
गर न संभल पाई तो भूतों का घर है,
संभल गई तो भगवान की सूरत है।

और भी कहा है :-

वाह जिन्दगी तेरी क्या अजब परिभाषा है,
संभल गई तो जन्नत नहीं तो तमाशा है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

चोट किसने दी

इंसान जीवन में हजारों चोट खाता है उन चोटों का अनुभव भी

उसका अलग - अलग ही होता है। यह अनुभव चोट की सामर्थ्य से नहीं चोट देने वाले के भावों पर आधारित होता है। माँ की दुलार की थपकी जरा तेज भी हो जाये तो भी आनंद आता है दूसरा थोड़ा हाथ से छू भी दे तो रोने लग जाता है। जिससे चोट की अपेक्षा न हो उसकी चोट बड़ी भयंकर लगती है, जिससे सदैव चोटों की ही अपेक्षा की हो उसकी चोट का आभास भी नहीं होता। युद्ध में शत्रु के तीखे बाण भी कमजोर लगते हैं उससे ज्यादा चुभन अपने मित्रों के नीरस वचनों से होती है, दूसरी बात यह है कि पराये की चोट तो बाहर से दिखती है उसका उपचार भी संभव है किन्तु अपने की चोट का घाव अंदर से होता है उसका उपचार भी अंदर रहने वाले ही कर सकते हैं कहा भी है -

जिस घाव से रक्त न बहे, समझो वह चोट किसी अपने ने ही दी है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

टूटना बुरा नहीं किन्तु

नारियल, बादाम, इलायची आदि के आवरण ऊपर से टूट जाने पर

भी अंदर की वस्तु सुरक्षित ही रहती है, बाहर की टूटन हानिकारक नहीं है। कभी किसी का हाथ या पाँव टूट जाये या कमर की या रीढ़ की हड्डी भी टूट जाये तब भी घबराने की आवश्यकता नहीं है। व्यक्ति युद्ध में कितना भी घायल हो जाये फिर भी युद्ध में उत्साह के साथ युद्ध करता रहता है किन्तु वही योद्धा अपनों के द्वारा किये गये छल - कपट व धोखे खाने से अंदर से टूट जाता है उन्हें बाहर का व्यक्ति कैसे जोड़ सकता है। जीवन में कभी अंदर से मत टूटो अपने मूल से मत छूटो। ध्यान रखो टूटना बुरा नहीं है अपितु अच्छा ही है जिसको टूटना चाहिए उसका टूटना। भ्रांति का टूटना, मोह का टूटना, अज्ञान के आवरण का टूटना, कर्मों की चट्टान का टूटना, विभाव परिणति का टूटना। जो तुम्हारे अन्दर बैठे हैं उनके कभी प्रतिकूल मत चलो अन्यथा वे तुम्हें अन्दर से तोड़ सकते हैं।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

ममत्व के M बिना

माँ शब्द संसार में अत्यन्त महत्वपूर्ण शब्द है। “म” अक्षर

प्रायः कर जीवन के आधारभूत शब्दों में भी प्रयुक्त होता है। यथा - धर्मात्मा, परमात्मा, पुण्यात्मा, आत्मा, समता, ममता, मोक्ष, धर्म, महात्मा, मध्यलोक, मानव, मर्यादा, सम्मान, मानवता, मरण, समाधि, मंदिर, मकान, मंतव्य, महल, श्मशान, मरुस्थल, मही, महीधर, सुमेरु, मन, मनोभाव, मधुरिमा, मार्दव, क्षमा, मेहमान, प्रमाण, ईमानदारी, धीमान, बुद्धिमान, मंगल, उत्तम, मनोरथ, परिश्रम, माहात्म्य, मंत्र, णमोकार, परमेष्ठी, आगम, मुनि, श्रमण, सामर्थ्य, सामग्री, मनोहरा, माध्यम, अमोघ, मनोज्ञ, अनुपम, समीचीन, महल, अनुमान, माध्यस्थ, मैत्री, गमन, नमस्कार, प्रतिक्रमण, कामदेव, प्रमोद, समिति, महाव्रत, निर्मलता, स्वामी, निमित्त, अनुमोदन, मूल, मूर्ति, लक्ष्मी, कर्म, प्रतिमा, कामना, मिष्ठान, मित्रता, रमणीय, मुस्कुराहट, समानता, मात्र, मुक्त, मुफ्त, माता इत्यादि शब्दों में ‘म’ अक्षर कितना महत्वपूर्ण है। इनमें से ‘म’ अक्षर निकाल दें तो शब्द अर्थहीन हो जायेगा। इसलिए कहा है - Mother में से M निकाल दें तो वह भी Other (अन्य) हो जाता है, Other में ममत्व का M हो तो माँ जैसा लगता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

दीर्घजीवी बनने का सूत्र

संसार में दीर्घजीवी वही होता है जो स्वयं अपनी लघुता व विनम्रता

की काबिलियत से जीता हो तथा उसके निकटवर्ती सहयोगी आश्रयदाता उसकी रक्षा में निरन्तर कृत संकल्पित हों। इसके विपरीत जिसका स्वयं का कोई वजूद - मूल नहीं हो अर्थात् अमरबेल की तरह पराश्रयी हो तो वह दीर्घजीवी कैसे हो सकता है? जिस वृक्ष की जड़ न हो तथा जिसके आश्रयदाता व आश्रय प्राप्त करने वाले रक्षक न बनें तो वह दीर्घजीवी कैसे होगा? बड़े से बड़ा वृक्ष भी स्वयं की कमजोर जड़ होने से एक आंधी तूफान में उखड़ कर धराशाही हो जाता है। किन्तु जिसकी जड़ गहरी व चारों तरफ फैली हों तथा जिसका ऊपर का भाग मूल की रक्षा में समर्पित हो उसे कौन नष्ट कर सकता है? इसी तरह जिस पुरुष का पुण्य प्रबल है सघन है, जो वर्तमान में पुण्य में लीन है तथा समीपवर्ती पुण्य में लगे हुए पुण्य के प्रेरक निमित्त हैं उन्हें कोई नष्ट नहीं कर सकता।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सच्चा मुस्कुराना

आज मानव ने अपने जीवन में भौतिक उन्नति चाहे कितनी

भी कर ली हो किन्तु आध्यात्मिक उन्नति आज लुप्त होती जा रही है। आध्यात्मिक विद्या का सूत्रपात भारत में ही हुआ किन्तु अब वह आध्यात्मिकता की फसल सूखती जा रही है। आध्यात्मिक वैभव को प्राप्त किये बिना आध्यात्मिक आनन्द कहाँ? आध्यात्मिक वैभव तत्त्वज्ञान के बिना असंभव ही है, तत्त्वज्ञान होने पर शारीरिक प्रतिकूलताएँ भी व्यक्ति के मार्ग में बाधक नहीं बन पातीं। आज मानव दूसरों को धोखा देने के लिए होठों से हँस रहा है किन्तु उसकी अन्तरात्मा रो रही है। वह वास्तविक हँसी, मुस्कुराहट और आनंद के लिए तरस रहा है। भौतिक समृद्धि कभी भी आत्मा का सुख नहीं दे सकती। बाह्य प्रतिकूलताओं में आत्मा अधिक मुखर हो उठती है - नाभि से उठने वाली मुस्कुराहट भी तभी संभव है। किसी ने ठीक ही कहा है - होठों से मुस्कुराना भी क्या कोई मुस्कुराना है, मुस्कुराना तो उस गुलाब से सीखिये जिसके काँटा भिदा है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

हर कोई बचके चलता है

तीव्र पापकर्म का उदय जब आता है तो अपने भी साथ छोड़ जाते

हैं, सपने भी नहीं आते, अपना साया तक भी अपना नहीं होता तब रात स्याह (काली) हो जाती है, शरीर भी बोझ बन जाता है, सभी अनुकूलता प्रतिकूलता सी प्रतिभासित होने लगती हैं, सुख दुःख हो जाता है, दिन रात में बदल जाता है, प्रकाश अंधकार का रूप ले लेता है, मित्र शत्रुता निभाने लगते हैं, रक्षक ही भक्षक होने लगते हैं, निरोगी शरीर भी रोगों से जर्जर हो जाता है, जवानी बुढ़ापा का रूप ले लेती है, हृदय में बैठने वाले ही हृदयाघात का कारण बनने लगते हैं, जड़ें तब जमीन को छोड़ने लगती हैं, पत्ते भी स्वयं टूट कर अलग हो जाते हैं फूल और फलों की बात ही कहाँ? समय से पहले बुढ़ापा गर्दन पकड़कर खड़ा हो जाता है तब कौन किसका साथ देता है, किसी ने ठीक ही कहा है -

“वक्त पीरी में कौन किसका साथ देता है।

हर एक बच कर चलता है गिरती हुई दीवार से।।”

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

को यले की खदान में कितना भी होशियार व्यक्ति जाये कोई न

कोई दाग कालिमा का लग ही जाता है, कीचड़ में से कितनी भी सावधानी से निकलो कहीं न कहीं वह लग ही जाती है, चूने की भट्टी पर पहुँचने पर चूने का सफेद दाग लग ही जाता है, चाहे कितनी ही सावधानी से प्याज के खेत से निकलो प्याज की गंध आने लगती है, पुष्प वाटिका के पुष्पों को छुए बिना समीप से निकलने मात्र से ही वस्त्रों में सुगन्ध आ जाती है, इत्र की शीशी कितनी भी सावधानी से खोलो महक फैल ही जाती है, अग्नि को चाहे किसी बर्तन से ढको बर्तन में उसकी तपन आने लगती है। हिमालय पर्वत पर पिघलते हिमगिरी की समीपता वस्त्रों को गीला करे ना करे ठण्डा तो कर ही देती है। ओस के पड़ने पर तुम्हारे सम्पूर्ण वस्त्र गीले हों या नहीं किन्तु नम तो हो ही जाते हैं। यदि बाहर प्रचण्ड गर्मी है तब दरवाजा बंद करने पर भी उसकी तपन भवन में आ जाती है, आंधी और तूफान के आने पर बंद मकानों में भी धूल भर जाती है, यदि बाहर शीत लहर चल रही हो तो भले ही खिड़कियाँ बंद हों फिर भी कमरा ठण्डा हो जाता है। दुःखों से भरे इस संसार में कितनी भी सावधानी से चलो कोई न कोई परेशानी तो आती ही है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

वी तरागी देव राग - द्वेषादि अद्वारह दोषों से रहित होते हैं, उन्हें

किसी प्रकार का विस्मय नहीं होता किन्तु सामान्य संसारी प्राणी को तो आश्चर्य होते ही हैं। विश्व में सात आश्चर्य माने जाते हैं किन्तु उनसे आश्चर्यचकित होने की आवश्यकता नहीं है। विश्व का आठवाँ - आश्चर्य प्रथम कामदेव श्री बाहुबली जी की दक्षिण भारत में विराजमान मूर्ति को आश्चर्य के रूप में देखते हैं, तो आध्यात्मिक योगी संत महात्मा जो तपस्या के उच्चशिखर की ओर बढ़ रहे हैं वे कहते हैं - इस काल में विषय कषाय आरम्भ परिग्रह से रहित निर्विकार साधक तपस्वी होना महान आश्चर्य की बात है तो कोई व्यक्ति दूसरे की मृत्यु देखकर अपने आप को अमर मानता है यही महान आश्चर्य है। कोई व्यक्ति इस काल में धर्म व धर्मात्मा का अभाव मानते हैं यह भी बड़ा आश्चर्य है। मैं समझता हूँ इन सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि व्यक्ति यह जानते हुए भी कि बुरे कार्य का फल नियम से बुरा ही होगा तब भी बुराई को नहीं छोड़ रहा है, यही विश्व का सबसे बड़ा महान आश्चर्य है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

आत्म शांति के मूलमंत्र

संसार का प्रत्येक प्राणी आत्म शांति चाहता है और उसके लिए

अहर्निश प्रयासरत भी रहता है। आत्म शान्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने मनोनुकूल सूत्रों को स्वीकार कर आत्म - शांति प्राप्त करना चाहता है अनेकों मनीषियों ने अलग - अलग शब्दों में आत्म शांति के सूत्रों को प्रस्तुत किया है यहाँ पर भी स्वानुभव निसृत आत्मशांति के मूलमंत्र प्रस्तुत हैं :-

आनंद में
क्रोध में
दुःख में
रोगावस्था में
शिक्षा में
संयम में
दान में
एकान्त में
धर्म में
भक्ति में
गुरु के साथ में
संकल्प में

वचन मत बोलिए
उत्तर मत दीजिए
निर्णय मत लीजिए
स्वाद मत लीजिए
सुख त्याग दीजिए
प्रमाद मत कीजिए
कृपणता मत कीजिए
पाप मत कीजिए
मन मलिन मत कीजिए
याचना मत कीजिए
छल मत कीजिए
विकल्प मत कीजिए ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

खूबसूरत रिश्ता

भक्त और भगवान का रिश्ता संसार में एक ऐसा रिश्ता है जिसे

अन्य किसी रिश्ते की उपमा नहीं दी जा सकती किन्तु भक्त अपने भगवान को हर रूप में मान लेता है। कभी वह अपने भगवान को भगवान मानता है तो कभी गुरु, कभी पिता मान लेता है तो कभी बड़ा भाई, कभी पुत्र तो कभी मालिक, कभी स्वामी तो कभी सेवक कभी जीवनसाथी तो कभी मित्र । भक्त की जैसी दृष्टि होती है उसे भगवान वैसे ही दिखाई देते हैं। संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो भक्ति का सही मूल्यांकन कर सके । यथार्थ भक्ति वह चीज है जो बाहरी आँखों या इन्द्रियों से पकड़ में नहीं आ सकती उसे तो अनुभव ही किया जा सकता है। किसी मनीषी ने ठीक ही कहा है कि - “जिन्दगी में क्या खोया क्या पाया? तो बेशक कहना **जो कुछ खोया वो मेरी नादानी थी और जो भी पाया वो प्रभु की मेहरबानी थी।** क्या खूबसूरत रिश्ता है मेरे और मेरे भगवान के बीच में “ज्यादा मैं मांगता नहीं और कम वो देते नहीं ।”

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

प्यास कहाँ बुझेगी

प्यासे व्यक्ति को तब तक शान्ति नहीं मिलती जब तक वह

सुस्वादु निर्मल शीतल जल का पान न करले, बड़ों की प्यास बड़ों के पास और छोटों की प्यास छोटों के पास बुझती है। चूहे, गिलहरी, खरगोश, गिरगिट आदि जानवरों को अपनी प्यास बुझाने के लिए सागर तक नहीं जाना पड़ता, व्हेल मछली कभी तालाबों में नहीं आती। जब बड़ों के पास छोटों की प्यास नहीं बुझती है तब वह छोटों के पास आता है, यदि छोटे व्यक्ति छोटों के पास नहीं आयेंगे तो अपनी प्यास न बुझा पायेंगे। इंसान गिलास आदि बर्तनों से पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते हैं किन्तु हाथी आदि बड़े जानवरों को गिलास नहीं बड़ा तालाब या झील चाहिए। यदि छोटा छोटे के पास नहीं जायेगा तो प्यासा ही रह जायेगा। छोटा व्यक्ति या पथिक ही महासागर के पास खड़े होकर पूछता है कि अरे भाई यहाँ कहीं कुआं, तालाब बावड़ी आदि है क्या? जहाँ जाकर मैं अपनी प्यास बुझा सकूँ, यह महासागर तो मुझे दूर से देखने में ही अच्छा लगता है, यह मेरी प्यास नहीं बुझा सकता। कवि बिहारी जी ने ठीक कहा है

अति अगाध अति ऊथरो नदी कूप सरवाय ।
सो ताको सागर कहे, जो जाकी प्यास बुझाय ॥

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

उसको जीना आ गया

जो पुण्योदय से प्राप्त हुई सहजोपलब्धि में अहंकार नहीं करता,

दूसरों का अपमान, तिरस्कार, अविनय, अवमानना, निंदा या उसके साथ दुर्व्यवहार नहीं करता अपितु ज्यों - ज्यों उसके जीवन में कोई नई उपलब्धि प्राप्त होती है त्यों - त्यों वह अधिक विनम्र होता चला जाता है, फलों से लदे वृक्ष की तरह झुक जाता है। पुष्पों से परिपूरित वृक्षों की तरह सबको अपनी सुगंधि रूपी गुण लुटाता है, हित - मित - प्रिय वचन व्यवहार करता है, संयम का उल्लंघन नहीं करता, अनुशासित जीवन जीता है, दूसरों के लिए आदर्श बनता है, प्रेरक निमित्त बनता है। प्रतिकूलता आने पर भी रोता - चिल्लाता नहीं है, दूसरों को दोष नहीं देता। दूसरों की उपलब्धि देखकर ईर्ष्या या मात्सर्य भाव धारण नहीं करता, हर परिस्थिति में अपने आपको संभालना जानता है, विपरीत परिस्थिति में भी अपने मन को अनुकूल बनाकर रखता है वास्तव में उसने ही जीवन जीने की कला सीखी है वही जीवन का यथार्थ आनंद ले सकता है। किसी ने ठीक कहा है

मुस्कुराकर रंजोगम जिसको पीना आ गया ।
सच मानिये मेरे मित्रों उसको जीना आ गया ॥

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

मुसीबत पल भर की

अरे भाई ! तू जीवन में स्वावलम्बी बन पराश्रित रहने में आनंद कहाँ, अमरबेल की तरह पराश्रित रहने से स्वावलम्बी घास लाख दर्जा अच्छी है। अनुकूलता और प्रतिकूलता किसके जीवन में नहीं आती किन्तु मनस्वी मनुष्य अनुकूलता में अपने कर्तव्यों का पालन करना भूलते नहीं तथा प्रतिकूलताओं में आँखों में आँसू भर - भर कूलते (दुःखी) नहीं । प्रतिकूलताओं पर विचार करें यह हमेशा नहीं रहेगी, अनुकूलता भी तो हमेशा नहीं रही, ये तो जीवन में आने वाले मेहमान हैं ये ऋतुओं की तरह आते हैं और चले जाते हैं कोई भी ऋतु स्थायी नहीं ठहर सकती। जीवन में कभी पुण्योदय होता है तो कभी पापोदय, कभी दिन तो कभी रात, कभी शुक्ल पक्ष तो कभी कृष्ण पक्ष, कभी प्रातः काल तो कभी संध्याकाल इसी तरह जीवन पुण्य - पाप की आँख - मिचौली खेलने वाला बहुरूपिया है। अरे भाई! दूसरों से सहायता लेने से पहले सोच लें कि मुसीबत तो पलभर की है किन्तु अहसान जिन्दगी भर रहेगा।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

वेदना पढ़ना सीखो

इस कलिकाल में उन लोगों की अधिकता है जो अज्ञान के अंधकार में जी रहे हैं, पंच इन्द्रिय के विषयों का विष पी रहे हैं, मिथ्या धारणा में जकड़े हैं, विपरीत मान्यता को पकड़े हैं, असंयम के जाल में फँसे हैं हिंसादि पापों के शिकंजे में कसे हैं या जो शंकालु और ईर्ष्यालु हैं। और उन लोगों की न्यूनता है जो सम्यग्ज्ञान के प्रकाश में जी रहे हैं आत्मानंद का रस पी रहे हैं, विषय - कषायों से मुक्त हैं, संयम से युक्त हैं, पापों से रहित हैं, धर्म ध्यान में लीन हैं। ऐसे समय में धर्म शास्त्र वेदों का पढ़ लेना तो फिर भी आसान है किन्तु किसी की अन्तर्वेदना को पढ़ पाना आसान नहीं है, वेदना को पढ़ने में समर्थ ही धर्मात्मा हो सकता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

गिरना ठीक नहीं

ऊर्ध्वगमन करना प्रत्येक आत्मा का शुद्ध स्वभाव है, अधोगमन

करना विभाव परिणति है, पतन है। गिरना कभी भी अच्छा नहीं होता, गिरने से अपनी हानि ही हानि है। पर्वत से, छत से, पलंग से, मेज से, कुर्सी से, तिपाई आदि से गिरने में शरीर को चोट पहुँचती है, तन घायल हो जाता है व घायल निराकुल नहीं हो सकता इसी तरह जो व्यक्ति धर्म की दृष्टि में अपनी आत्मा की दृष्टि में परमात्मा की दृष्टि में तथा गुरु व महात्मा की दृष्टि में गिर जाता है उसकी आत्मा भी घायल हो जाती है, दुःख पाती है, निराकुल सुख प्राप्त नहीं कर पाती इसलिए कहा है -

खुद को गिरने मत दो किसी हाल में,
लोग गिरे हुए मकान की ईंट भी ले जाते हैं।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

गैर जिम्मेदार मत बनो

मुसीबतें, तकलीफें, परेशानी, आपत्ति, विपत्ति व संकट के बादल

उसी के जीवन में मँडराते हैं जो जीवन में अपने व औरों के लिए कुछ अच्छा करने की जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। जो व्यक्ति जिम्मेदारी से, आगे बढ़ने से, अच्छे कर्मों को करने का संकल्प लेने से जी चुराते हैं उनके जीवन में परेशानी कहाँ? जो चलता है वही गिरता है जो चलेगा ही नहीं तो गिरेगा कैसे? अपनों से या गैरों से युद्ध में एक बात होती है या तो जीत या हार। मनस्वी जन धीरता से तो अपनों को तथा वीरता से औरों को जीतते हैं, अन्यथा जीवन का एक नया पाठ सीखते हैं।

गिरते हैं वही जो दौड़ते हैं मैदान में,
वह चींटी कहाँ गिरे जो जमी पे छाती के बल चले।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

हारिये न हिम्मत

जीवन के इस लंबे मार्ग रूपी युद्ध में कौन पराजित नहीं

होता? जिन्होंने भी जीवन में जीत को हासिल कर लिया है उनसे भी पूछो उन्होंने भी असफलता का अनुभव किया है। असफलता बुरी नहीं है यदि वह सफलता की प्रेरक निमित्त हो। वह सफलता भी अच्छी नहीं है जिस सफलता का फल असफलता से भी ज्यादा बदतर हो। जीवन में आगे बढ़ना है कल्पनातीत सफलता को प्राप्त करना है तो फिर हिम्मत न हारो क्योंकि जो हिम्मत हार जाता है वह जीत कर भी हार जाता है तथा जो हिम्मत नहीं हारता वह हार कर भी विजय महोत्सव का आनंद ले सकता है। हारना है तो अभिमन्यु की तरह जो युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ किन्तु अन्याय पूर्वक युद्ध नहीं किया, जीतो तो बाहुबली की तरह जिन्होंने जीतकर सब कुछ छोड़ दिया।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

फिसलता जरूर है

तीव्र वेग से बहने वाली नदी को बच्चों के द्वारा निर्मित बालू की

दीवाल खड़ाकर रोकना, पर्वत से गिरते हुए झरने को मकड़ी के जालों में निबद्ध कर अवरुद्ध करना, पारे को रस्सियों से बांधना, हवा को पिंजरे में बंद करना, आकाश को मुट्टी से बांधकर कहीं ले जाना, अपना जीवन दीर्घजीवी बनाने के लिए श्वांसों को रोककर उसका संग्रह करना, अग्नि के दरिया को तैरना, मोम को अग्नि में शुद्धकर उसके आग्नेय अस्त्र बनाना जितना असंभव है उतना ही असंभव है समय को मुट्ठी में बंद करके रखना। जीवन में समेटा हुआ समय मौत के द्वारा छीन लिया जाता है अतः जीवन में सार्थक कार्य करें तभी समय तुम्हारा हो सकेगा। किसी ने ठीक कहा है -

**कितना भी बटोर लो हिम, वह पिघलता जरूर है।
भाई साहब यह समय है हाथों से फिसलता जरूर है।।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

अच्छाई पर खामोशी क्यों

किसी असहिष्णु युवती के सामने उसी की अति स्वाभिमानी

सासु माँ की प्रशंसा की जाती है या व्याकुल चित्त सासु के सामने बनी ठनी बहु की प्रशंसा की जाती है या एक भाई के सामने उसके पिता द्वारा दूसरे भाई के गुणों की प्रशंसा की जाती है या किसी स्त्री के सामने उसके पति द्वारा दूसरे की पत्नी की प्रशंसा की जाती है, एक गुरु द्वारा अपने शिष्य के सम्मुख दूसरे लघु शिष्य की प्रशंसा की जाती है या समाजश्रेष्ठी के द्वारा एक विद्वान के सामने दूसरे विद्वान की प्रशंसा की जाती है तब सुनने वाला उपेक्षा भाव से सुनता हुआ खामोश क्यों हो जाता है? अपने से अल्प गुणवान् विरोधी के गुणों की प्रशंसा की जाती है तब आपकी खामोशी क्यों? आज अधिकांश यह देखा जाता है कि अपने प्रतिद्वंदी की प्रशंसा में कुशलवक्ता भी मौन हो जाते हैं और दोषों की चर्चा हो तो गूंगे भी बोल पड़ते हैं। इसलिए इस युग में दुःख अधिक दिखाई देता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

दीनता क्यों?

जहाँ पतझड़ है वहाँ बसन्त भी आ सकता है जहाँ सुनसान जंगल है

वहाँ जनपद भी हो सकता है, श्मशान के स्थान पर महल और किला भी बन सकता है, एक कली पुष्प भी बन सकती है, एक कंकड या पाषाण परमात्मा की मूर्ति भी बन सकती है, बिंदु भी सिंधु बन सकती है, रंक भी राजा बन सकता है, असहाय भी शरणदाता बन सकता है, एक छोटा सा बीज भी महावृक्ष बन सकता है, एक तुच्छ जीव भी परमात्मा बन सकता है, अधमात्मा भी महात्मा बन सकता है, परमाणु भी महास्कंध बन सकता है, किंकर स्वामी बन सकता है, मूर्ख भी विद्वान बन सकता है, कुरूप भी रूपवान् अत्यंत सुन्दर बन सकता है। जीवन में कुछ भी असंभव सा नहीं दिखता यदि हमारा मार्ग सम्यक् है गति व लक्ष्य सम्यक् है, पुरुषार्थी कभी नहीं हारता वह तो मंजिल को सहज में ही पा लेता है।

**सम्यक् पुरुषार्थी की तकदीर बदलती जरूर है।
दर्पण वही रहता है उसका प्रतिबिंब बदलता जरूर है।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

“इतनी ऐंट क्यों?”

प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त सुरम्य नन्दन वन भी क्षणार्द्ध में

पतझड़ से युक्त निर्जन वन बन सकता है, गगनचुंबी महलों को धराशाही होते हुए भी देखा है, अपने कदमों से भूमि को कंपित करने वाले भूपति - राज्याधिपतियों को क्षुधातुर अवस्था में भिक्षापात्र ले याचना करते देखा है, सततप्रवाही नदियों को बालू के ढेर से युक्त शुष्क अवस्था में भी देखा है, देवों को भी एकेन्द्रिय होते हुए देखा है, कामदेव सम सुन्दर पुरुषों को कुष्ठ रोगी होते हुए देखा है, बड़े - बड़े विद्वानों को भी मूर्ख होते हुए देखा है, महासतियों पर भी कुशीलकारी लोकनिंदा देखी है, लोकप्रिय लोकनिंद्य भी हो जाता है, वंदनीय भी निन्दनीय अवस्था को प्राप्त हो जाता है। शुक्लपक्ष सदा नहीं रहता कृष्ण पक्ष भी जीवन में आता ही है, इन्द्रधनुष के समान सम्पत्ति भी नष्ट हो जाती है, ओस की बूंदों की तरह यौवन भी नष्ट हो जाता है अतः अहंकार क्यों? संध्या में तो अत्यन्त प्रतापी सूर्य भी ढल जाता है हिमगिरी भी हवा के झोंके से सहज ही पिघल जाता है, अरे मानव ! आज के वैभव पर मान मत कर मानव भाग्य दुर्भाग्य में बदल जाता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

क्या है ये हठ

लोक व्यवहार में तीन हठ मानी जाती हैं। 1. नारी हठ 2.

बालहठ 3 राजहठ। इसका अर्थ करते हैं - नारी, बालक व राजा बहुत जिद्दी/ हठाग्रही होते हैं ये अपनी जिद जब तक पूरी नहीं हो जाती तब तक हटते नहीं किंतु परमार्थ से चार हठ मानी जाती हैं और उनका अर्थ भी पृथक माना जाता है प्रथम नाड़ी हठ इसका अर्थ हाथ चलने वाली जीवंतता की प्रतीक नाडी हटती नहीं, हट जाती है तो फिर आती नहीं है। दूसरी बालहठ - बालों को कितना भी काटो हजामत करा लो वे हटते नहीं तीसरा। रागहठ - आत्मविद्यमान राग हटता नहीं, हट जाए तो आता नहीं। चतुर्थ योगहठ आत्मा में से एक बार मन - वचन - काय ये तीनों योग हट जायें अयोगी केवली दशा हो जाये तो वे योग कभी आते नहीं। इन पारमार्थिक हठों को समझो - समझने से नटों मत, भटको मत, अटको मत।

रागहठ - आत्मविद्यमान राग हटता नहीं हट जाए तो आता नहीं। चतुर्थ योगहठ आत्मा में से एक बार मन - वचन - काय ये तीनों योग हट जायें अयोगी केवली दशा हो जाये तो वे योग कभी आते नहीं। इन पारमार्थिक हठों को समझो - समझने से नटों मत, भटको मत, अटको मत।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

अनुकूलता कहूँ या प्रतिकूलता

प्रतिकूलता में छुपा है अनुकूलता का बीज, छोटे से बीज में छिपा

है विशाल वट वृक्ष, अणु में छिपी है स्कंध बनने की शक्ति, काँटों के बीच फूल खिलते महकते रहते हैं। जिन पत्थरों से ठोकरें खाई जाती हैं उन्हीं पत्थरों से मंदिर, मूर्ति, भवन भी बन जाता है, उबलते पानी से भी शीतल वाष्प पैदा की जाती है, शीतल ठंडी बर्फ भी दाह पैदा करने वाली होती है, जीवन में जिससे खुशी मिलती है वह जीवन में दुःख अशांति व संक्लेशता का कारण भी बनता है। पर्वत से गिरता हुआ झरना केवल शीतलता ही नहीं देता है अपितु मधुर संगीत भी देता है। किसी ने ठीक ही लिखा है **झरनों से मधुर संगीत सुनाई नहीं देता गर राह में उसकी पत्थर नहीं होते।** अतः प्रतिकूलताओं में अनुकूलता का बीज मिलता है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

क्यों डरते हो

यदि तुम्हारे पास सर्दी से बचने के लिए गर्म कपड़े हैं तो तुम सर्दी से

क्यों डरते हो? गर्मी से बचने के लिए शीतल पेय और वातानुकूलित स्थान है तो गर्मी से क्यों डरते हो? धूप व वर्षा से बचाने वाला छाता है तो धूप व वर्षा से डरते क्यों हो? उठकर चलने का साहस है तो चलने से डरते क्यों हो? मंजिल पाने का जुनून है तो मार्ग के पत्थरों से डरते क्यों हों? और तैरना जानते हो तो पानी में नहाने से क्यों डरते हो? पानी उसे ही डुबाता है जो तैरना नहीं जानता, दूध फटने पर दुःखी वही होता है जो उसका पनीर बनाना या सदुपयोग करना नहीं जानता, परिस्थितियाँ उनके लिए समस्या नहीं हैं जो उनसे निपटना जानता है, अपनी निंदा उसे बुरी लगती है जो अपने व्यक्तित्व को सुधारना नहीं जानता अतः तुम **डरो मत आगे बढ़ो, मंजिलें तुम्हारी राह देख रही हैं।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

दूसरा उपाय सोचो

छाते के माध्यम से ऊपर से बरसते पानी से भीगने से बच सकते हो यदि उसका समीचीन उपयोग करोगे तो, किन्तु वह छाता तुम्हें नदी में आती हुई बाढ़ के पानी में डूबने से नहीं बचा सकता, डुबाने वाला पानी ऊपर से नहीं नीचे से डुबाता है। धन दौलत से बाहरी परेशानियों को कम तो कर सकते हो यदि आपका पुण्य कर्म का उदय चल रहा है तो, अन्यथा पाप कर्म- सब कुछ होते हुए भी आपको दर - दर की ठोकें खाने वाला भिखारी बना सकता है। औषधि से आप कुछ रोगों का उपचार तो कर सकते हैं किन्तु कर्म के उदय को टालने की सामर्थ्य औषधियों में कहाँ? जीवन बीमा कम्पनी से बीमा कराकर अपने, पत्नी व बच्चों के सुखी जीवन बनाने की सोच तो सकते हो किन्तु उनका पुण्योदय हुए बिना उन्हें सुखी जीवन कैसे मिल सकता है? शाश्वत समाधान व सुख के लिए कोई दूसरा उपाय सोचो।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

जो चलेगा वही पहुँचेगा

औषधि रोग को टाल सकती है किन्तु मौत को नहीं, तुम्हारी गाड़ी के ब्रेक तुम्हारी गाड़ी को रोकने में समर्थ हो सकते हैं टक्कर मारने वाली दूसरी गाड़ी को तो नहीं रोक सकते, शिक्षक तुम्हें शब्दों की शिक्षा देकर विद्वान तो बना सकता है किन्तु ज्ञानी नहीं बना सकते, कोई भोजन देकर तुम्हारी भूख तो शान्त कर सकता है किन्तु भोजन का आनंद नहीं दे सकता, कोई बिस्तर देकर सोने की व्यवस्था दे सकता है किन्तु सुखद नींद नहीं दे सकता, कोई तुम्हें रास्ता तो बता सकता है किन्तु मंजिल नहीं दे सकता, गुरुजन सद्मार्ग दे सकते हैं किन्तु सद्मार्ग पर चलना तुमको ही पड़ेगा। इसी तरह आत्म कल्याण तुम्हें ही अपने अन्दर खोजना है इस मार्ग पर तुम्हें ही चलना है और मंजिल भी तुम्हें ही प्राप्त करना है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

तेरे सिवा कोई न तेरा

किसी को आजमाने की कोशिश मत करना क्योंकि आजमाते ही

अपने पराये हो जाते हैं। जीवन बड़ा विचित्र है जब अनुकूलता होती है तब सब अपने ही दिखाई देते हैं किन्तु ज्यों ही प्रतिकूलता आती है तो सभी साथ छोड़ने लगते हैं। यहाँ तक की परछाई व शरीर भी साथ छोड़ देते हैं, देखने में सब स्वर्ण दिखाई देता है पर तपाने बैठो तो सब जलकर खाक हो जाता है इस स्वार्थ भरी दुनियाँ में कौन किसका साथ निभाता है? जब तक तुम स्वयं अपना साथ निभाने में पूर्ण समर्थ हो और दूसरों की सहायता व सहयोग देने में सक्षम हो तभी तक सब लोग तुम्हारा साथ देने की प्रतिज्ञा करते हैं किन्तु जब तुम्हें स्वयं को संभालने में समर्थ नहीं देखते तब कोई पास भी नहीं आता। **जब सब कुछ था तब सब रुक - रुक कर देखते थे किन्तु आज देखो सब बचकर निकलते हैं।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

दोनों जरूरी हैं

लोग जितने प्यार, स्नेह और भावनाओं से परिपूरित होकर

परिवार बनाते व बसाते हैं, जितनी उदारता व त्याग की भावना से घर व मकान बनाते हैं, वे ही उस मकान में उस परिवार में उतनी भावना, प्रेम, स्नेह, करुणा, दया, त्याग व उदारता के साथ रह नहीं पाते। मकान व परिवार को बनाते - बनाते उनकी अपेक्षाएँ व अहं भाव भी वृद्धि को प्राप्त हो जाते हैं, द्रव्य व शक्ति खर्च होते - होते उनकी उदारता, त्याग भावना, सहनशीलता व प्रेम - वात्सल्य भी खर्च हो जाता है और फिर वे उस परिवार में गुणों से गरीब होकर रह जाते हैं अतः रिश्तों व सम्बन्धों को भी वे निभा नहीं पाते, कोई रूठ जाए तो मनाने की कोशिश भी नहीं करते किन्तु एक आदर्श परिवार ऐसा होना चाहिए जो रिश्तों की डोर थामकर रखे। कहा है-

**टूटते रिश्तों को कुछ इस तरह बचा लिया करो
कभी मान जाया करो तो कभी मना लिया करो।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

अपने व अपनों के बिना

आज का व्यक्ति भौतिकता की चकाचौंध में अंधाधुन दौड़ रहा

है व होश खो बैठा है धन और पैसा कमाने के चक्कर में यश - प्रतिष्ठा पाने के लोभ में। विषयों की अत्यासक्ति व कषायों के पोषण में इतना पागल हुआ जा रहा है कि उसे अपना व अपनों का तनिक भी ख्याल नहीं है इतना ही नहीं उसे अपने कर्तव्य पालन की भी परवाह नहीं है। जिससे भी पूछो कर्तव्य पालन करते हो? या धर्म ध्यान करते हो? वह कहता है वक्त ही नहीं, सुख शांति से जीने का समय नहीं है आपके पास रिश्ते निभाने के लिए भी समय नहीं। अरे भाई ! तुम अपने को व अपनों को भूल कर जो कुछ भी कमाओगे वह कभी तुम्हारे काम नहीं आयेगा। ध्यान रखना यदि तुमने अपने को व अपनों को छोड़ कर वक्त निकाल भी लिया तो आगे पछतायेगा और तुम ही बताओं अपनों के बिना वह वक्त तुम्हारे किस काम आयेगा?

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

बहुमूल्य कौन?

दुनियाँ में विद्यमान वस्तुओं का मूल्य उसकी गुणवत्ता से होता है

उसके आकार रूप रंग आदि से नहीं। कस्तूरी काली होते हुए भी तोले मासे से तोली जाती है नमक सफेद होते हुए भी बाँटो से तोला जाता है। काली कस्तूरी अधिक मूल्यवान है धवल नमक से, इसी तरह लकड़ी की बैलगाड़ी की कीमत लगभग बीस हजार रुपये मूल्य होगा किन्तु स्कूटर या बाइक का मूल्य लगभग एक लाख रुपये। जुगाड़ / टेला या ट्रक का मूल्य कम होगा और अच्छी विलासी - B.M.W. या Fortuner कार का मूल्य उससे कई गुणा अधिक या और अधिक अच्छी गाड़ी कम साइज होने पर भी अधिक मूल्य। काँच की बोतल एक रुपये की होगी उसका हजारवां हिस्सा हीरे का मूल्य करोड़ों रुपयों का हो सकता है अतः ऊँची आवाज में बोले गये सारहीन शब्द व्यर्थ हैं तथा धीमी आवाज में बोले सारभूत शब्द सार्थक हैं। देखो ! फसल बारिश की फुहार से ही होती है बाढ़ से नहीं। इसीलिए **छोटे भले ही हों पर गुणों से युक्त सारभूत बनो बहुमूल्य कहलाओगे।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सर नहीं मन भी

प्रभु या गुरु भक्ति का आनंद या पूर्ण फल प्राप्त करना चाहते हो

तो मन को पवित्र बनाओ। अपवित्र मन से की गई पूजा, भक्ति, स्तुति, वंदना, नमस्कार आदि व्यर्थ ही होते हैं कभी - कभी अनर्थकारी भी हो सकते हैं। तन की पवित्रता व वचनों की शुद्धता परमात्मा के पाने में या आत्मानुभव कराने में असमर्थ है। जो कार्य शुद्ध मन से ही हो सकता है वह तन की शुद्धि से नहीं होगा जो कार्य जिस कारण से होगा उसके लिए अन्य कारण व्यर्थ है। गुरु या परमात्मा के सामने यदि मन समर्पित हो गया तो समझो अपना कल्याण निश्चित है किन्तु मन यदि श्रद्धा भक्ति विनय समर्पण आदि से नहीं भरा है तो समझो अभी कल्याण दूर है, परमात्मा तुम्हारी पोशाक वेश भूषा व शब्दों से प्रभावित नहीं होगा वह तो स्वयं शुद्ध है तथा शुद्ध हृदय वाले में ही उसका अनुभव संभव है अतः भगवान के चरणों में मात्र झुकना पर्याप्त नहीं मन भी लगाओ तभी कल्याण संभव है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

इन्हें भी आजमा लो

संसार में जितने भी प्राणी हैं वे अपना जीवन अपनी - अपनी तरह

से ही जीते हैं किसी को कुछ पसंद है तो किसी को कुछ और। सुख प्राप्ति की कामना तो सबकी रहती ही है। सुखी जीवन जीना संसार की सबसे बड़ी कला है, यहाँ सुखी जीवन जीने के कुछ सूत्र प्रस्तुत किये जाते हैं - आप भी इन्हें आजमाकर देखिये **1.** जीवन में रोना है तो बच्चों की तरह - जिसमें कि मन में भी कोई विकल्प शेष न रहे **2.** सोना है तो भिखारी की तरह - उसे न आने वाले कल की चिंता है न बीते कल का अफसोस **3.** देना हो तो सम्राट की तरह - इतनी उदारता दिखानी चाहिए कि बाद में देने की तमन्ना अधूरी न दिखे। **4.** लेना हो तो कर्ज की तरह - जिससे कि तुम्हें आवश्यकता से अधिक लेने की तृष्णा न हो **5.** खाओ तो औषधि की तरह - जिससे ग्रहण किया आहार (भोजन) विकारी न बने, बीमारी पैदा न करे। **6.** लीन रहो योगी की तरह - जिससे निश्चित ध्यान कर सको।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

समर्पण हो तो ऐसा

दूध में पड़ा हुआ बूरा, शरबत में पड़ा हुआ नींबू का रस, सब्जी में पड़ा हुआ नमक घुल मिलकर अपना प्रभाव छोड़ देते हैं अलग से दिखायी नहीं देते किन्तु स्वाद में स्व के अस्तित्व का बोध कराते हैं यदि ये उनमें न मिले तो अभाव का एहसास होता है। समर्पण करने वाला दिखायी देता नहीं किन्तु जिनको समर्पण किया है उसे उसका अहसास अवश्य होता है जीवन में समर्पण निस्वार्थ व बेशर्त हो जिस समर्पण के पीछे कोई आकांक्षा हो तो समझो वह समर्पण नहीं व्यापार है।

समर्पण में कोई आशा नहीं होती,
समर्पण में कोई निराशा नहीं होती,
समर्पण तो निस्वार्थ सब कुछ लुटाने का नाम है,
इसकी शब्दों में कोई निश्चित परिभाषा नहीं होती ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

मत मांगो देना सीखो

प्रशंसा, प्रतिष्ठा एवं प्रेम जितना दूसरों को दिया जाता है कुंएँ के

समीप खड़े होकर दी गई आवाज की तरह से कई गुणा होकर वापस लौट आता है । इन तीनों चीजों में कंजूसी करने वाले जीवन में न किसी को प्रेम आदि देते हैं और न ही लेने में समर्थ होते हैं। बुद्धि के बल पर जीने वाला इन्हें काँट - छाँट कर घायल कर देता है और ज्यादा सोच में पड़ जाए तो मृत्यु भी, किन्तु अपने जीवन का निरन्तर आनंद लेने वाले अपनी मुस्कुराहट की श्वासों से इनकी आयु को दीर्घजीवी करने में समर्थ होते हैं। प्रशंसा, प्रतिष्ठा व प्रेम रूप्यों से खरीदने वाली चीज नहीं है इसके लिए तो स्वयं को ही योग्यता के साँचे में ढलना पड़ता है, लौकिक जीवन में ये तीनों हैं तो झोंपड़ी में स्वर्ग है और नहीं हैं तो महलों में भी नरक है।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

देखो तीन का सीन

जीवन में तीन बातों का बड़ा महत्व माना जाता है, योग भी तीन

तो भोग भी तीन, रोग भी तीन तो औषधि भी तीन, अवस्था भी तीन तो व्यवस्था भी तीन ये तीन जीवन में नवीन नहीं है अपितु महीन से महीन तत्त्व को भी समझाने में समर्थ है। तीन की बीन, कर्मों की मशीन को वह नाच नचा सकती है कि कर्म दीन हीन हो करके विहीन होने लगते हैं। प्रवीन पुरुषों ने तीन के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा है देखो ! जीवन में ये तीन चीज हमेशा दुःख देने वाली होती हैं- धोखा, गरीबी व यादें । किन्तु तीन चीजें जिन्हें जीवन में धारण कर लिया जाए तो शाश्वत सुख भी मिल सकता है वो है सम्यक् श्रद्धा, ज्ञान और संयम । तीन चीजों को उठाने से पहले खूब सोचिये वे हैं कलम, कसम व कदम । तीन चीजों में विवेक का परिचय देना चाहिए वे हैं विश्वास, वादा व फैसला । बुद्धिमान माँगने पर ही ये तीन चीज देते हैं जवाब, सलाह व उधार।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

असफलता में भी सफलता

संसार में ऐसा व्यक्ति खोजना कठिन है जो निरन्तर सफलता को

प्राप्त करता रहे और संसार में ऐसा व्यक्ति भी खोजना कठिन है जिसने निरन्तर असफलताओं का आलम ही देखा हो। आप कहेंगे अमुक व्यक्ति जीवन में कभी असफल नहीं हुआ किन्तु ध्यान रखो वह असफल तो हुआ था किन्तु उसने उसे असफलता नहीं माना अतः वह असफलता भी उसके लिए सफलता में काम आयी और यह भी कह सकते हैं अमुक व्यक्ति निरन्तर असफल होता जा रहा है परन्तु ऐसा कभी होता नहीं। हो सकता है असफलताओं के बीच प्राप्त हुई सफलता वह पहचान ही नहीं पाया हो या उस सफलता को भी असफलता मानकर फेंक दिया हो । ध्यान रखो संसार में कोई असफलता असफलता नहीं होती जब तक कि हम उसे असफलता के रूप में स्वीकार न करलें। अरे भाई ! 1000 कार्यों में प्रारम्भ की 900 असफलताओं को देखकर तू घबराता क्यों है क्योंकि कई बार ऐसा भी देखा जाता है करोड़ों चाबियों में एक अन्तिम चाबी ही ताला खोल पाती है, हो सकता है तेरी वही चाबी रह गयी हो । क्या तुम नहीं जानते **असफलता में भी सफलता है यदि 'अ' हटाने में समर्थ हो तो ।**

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

फाँसला और फैसला

आज का अधिकांश मानव भ्रान्ति के युग में जी रहा है और

शान्ति पाने के लिए क्रान्ति करने को तैयार है। अरे भाई ! अपने मन की गाँठें खोलना सीखो इससे भ्रान्ति तो मिटेगी ही शान्ति भी मिलेगी और क्रान्ति करने की आवश्यकता भी नहीं होगी। कई बार आप कहते हो अरे तुम्हारे बारे में भ्रम हो गया है, तुम इस बात को स्वीकार करो कि तुम्हें भी तो किसी के बारे में भ्रम हो सकता है। भ्रम दूर करने के लिए थोड़ा सा श्रम करने की आवश्यकता है अपने मन की बात को उसके सामने रख दो और उसके मन की बात को बिना दुराग्रह के स्वीकार कर लो उसके माध्यम से तुम्हें जीवन के अत्यन्त महत्वपूर्ण फैसले प्राप्त होंगे और यदि ऐसा न कर सके तो जीवन के फाँसले बढ़ते चले जायेंगे ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

तलाश क्यों?

जीवन में अच्छाई या गुणों को प्राप्त करने के लिए अच्छे निमित्तों की

आवश्यकता होती है। द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव का प्राणी के परिणामों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। जैसा द्रव्य, क्षेत्र, काल व भाव होता है परिश्रम भी वैसे ही होने लगते हैं। भला आदमी बनने के लिए भले की खोज आवश्यक है और उसकी विशेषताओं को भी ग्रहण करना जरूरी है। यदि कोई भला आदमी नहीं मिल रहा है तो उसकी असफल तलाश मत करो अपितु आप स्वयं ही भले आदमी बन जाओ तब आपको पाकर भी अनेक लोगों की भले आदमी को खोजने की तलाश पूरी हो जायेगी ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

सफलता का बीज

संसार में चार प्रकार के लोग होते हैं एक वे जो मार्ग में आने वाली

प्रतिकूलताओं व बाधाओं व दूसरों के द्वारा की गई टीका - टिप्पणी को सुन कर अच्छे मार्ग पर कदम नहीं बढ़ाते। दूसरे प्रकार के लोग वे होते हैं जो साहस बटोर कर कार्य को प्रारम्भ तो कर देते हैं किन्तु जैसे ही कोई प्रतिकूलता सामने आती है तो उसे छोड़ देते हैं। तीसरे प्रकार के लोग वे होते हैं जो मार्ग पर चलते तो हैं समागत विघ्न बाधाओं को देखकर निन्दा, टीका - टिप्पणी सुनकर अपने सिद्धान्तों को बदल देते हैं और कार्य की पूर्णता के पहले ही विफल हो जाते हैं अर्थात् जिस उद्देश्य से कार्य प्रारम्भ किया था कार्य पूर्ण होते होते ही उद्देश्य विस्मित हो जाता है किन्तु चतुर्थ प्रकार के लोग वे होते हैं जो विघ्न - बाधाओं से और भी दृढ़ हो जाते हैं उनका अदम्य साहस दृढ़ हो जाता है, दूसरों की टीका - टिप्पणी व निन्दा उनके लिए प्रेरणा स्रोत बन जाती है। यह तो नियम है कि दुनियाँ सबकी टीका - टिप्पणी करती है किन्तु अच्छे खिलाड़ी, दर्शकों के द्वारा शोर मचाये जाने पर भी खेलना नहीं छोड़ देते ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

नाम या बदनाम

संसार के सभी भले व्यक्ति अच्छे - अच्छे कार्य करते हैं, यश,

कीर्ति, प्रतिष्ठा तथा प्रशंसा को सभी प्राप्त करना चाहते हैं इसके लिए कोई जी तोड़ मेहनत करता है तो कोई सामर्थ्य से ज्यादा दान, कोई शक्ति से अधिक त्याग तपस्या करता है तो कोई अपनी स्वाधीनता छोड़कर पराधीनता तक ओढ़ लेता है यह भी सत्य है कि दुनियाँ में नाम कमाना या यश, निर्मल प्रतिष्ठा प्राप्त करना बहुत कठिन कार्य है, यह कार्य व्यक्ति को खुद ही करना पड़ता है किन्तु इसके विपरीत बदनामी, बुराई, निन्दा, बेइज्जती आदि इसको खुद नहीं कमाना पड़ता इसे दुनियाँ कमाकर देती है यही है नाम और बदनाम में मूल अन्तर ।

दिगम्बराचार्य मुनि वसुनंदी

